सतना

19 अप्रैल 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

पीएसएल में पहले...

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

भारत की मदद का मुरीद हुआ म्यांमार, नौकरी घोटाले में फंसे 4 भारतीय नागरिकों को भेजा वापस

यांगून (एजेंसी)। म्यांमार के भूकंप पीड़ितों की उम्मीद से ज्यादा मदद करके भारत ने इस देश का दिल जीत लिया है। भारतीय टीम लगातार अभी भी म्यांमार में भूकंप पीड़ितों की मदद को तत्पर है। लिहाजा म्यांमार भारत की मदद का मुरीद हो चुका है। अब म्यांमार ने भी नौकरी घोटाले में फंसे चार भारतीय नागरिकों को वापस भारत भेजकर अपना फर्ज अदा किया है। शुक्रवार को जारी एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई है। भारतीय दूतावास ने घोषणा की है कि उसे म्यांमार के अधिकारियों से इस संबंध में मंजूरी मिल गई है। साथ ही, इसने अन्य लोगों को भी फर्जी नौकरी प्रस्तावों के प्रति भी आगाह किया है। इसने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''कल म्यांमार के अधिकारियों द्वारा इन चार भारतीय

नागरिकों को म्यावाड्डी परिसर से बाहर निकलने की अनुमति प्रदान की गई तथा उन्हें यांगून के माध्यम से वापस भेजा गया।'' दूतावास की ओर से पहले की गई पोस्ट के अनुसार, भारतीय नागरिकों को म्यावाड्डी साइबर-घोटाला नेटवर्क से मुक्त कराया गया और स्थानीय अधिकारियों द्वारा उन्हें हपा-आन शहर से यांगून लाया गया, जहां उन्हें भारतीय मिशन को सौंप दिया गया। म्यांमार-थाईलैंड सीमा पर स्थित म्यावाड्डी क्षेत्र में सक्रिय अंतरराष्ट्रीय आपराधिक गिरोहों के शिकार बनने वाले भारतीय नागरिकों की घटनाओं में वृद्धि हुई है। दूतावास भारतीय नागरिकों को ऐसी नौकरी की पेशकशों से सतर्क रहने की चेतावनी देता रहता है। इसने कहा, ''यह अपील की जाती है कि भारतीय नागरिकों को सोशल मीडिया मंचों या अन्य असत्यापित स्रोतों के माध्यम से पेश किए गए नौकरी के ऐसे प्रस्तावों को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

इटली में दुर्घटना का शिकार हुई केबल कार, 3 पर्यटकों समेत 4 लोगों की मौत

रोम (एजेंसी)। इटली में एक केबल कार के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से 3 पर्यटकों समेत 4 लोगों की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि यह हादसा इटली के नेपल्स के दक्षिण में हुआ, जहां एक केबल कार अचानक दुर्घटना का शिकार हो गई। इसमें सवार तीन पर्यटकों सहित चार लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार मरने वालों में एक ब्रिटिश और एक इजरायली महिला भी शामिल है। इटली के विको इक्वेन्स के मेयर के प्रवक्ता मार्को डी रोजा ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह दुर्घटना बृहस्पतिवार को हुई। अब तक दुर्घटना में मारे गए तीन विदेशी पर्यटकों में से केवल दो की ही पहचान हो पाई

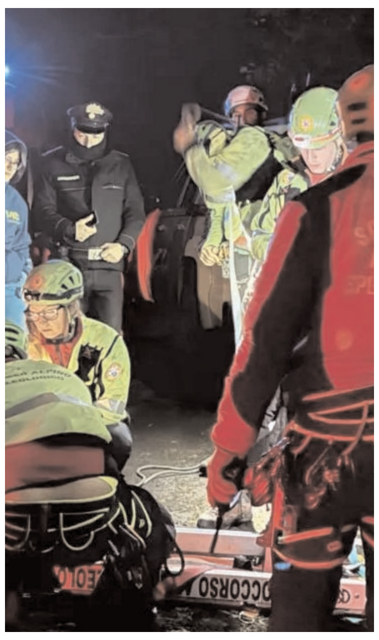

है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, एक 'ट्रैक्शन केबल' के टूटने की वजह से यह दुर्घटना हुई। इतालवी अधिकारियों ने घटना की जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों ने बताया कि विदेशी पर्यटक माना जा रहा पांचवां व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया और उसे नेपल्स के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

नया विदेशी कानून गलत है और भारतीयता के खिलाफ है

नई दिल्ली (एजेंसी)। जब देश वक्फ कानून और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ की चर्चा में व्यस्त था, तब केंद्र सरकार ने चुपके से नया आप्रवासन और विदेशी कानून 2025 पास कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के मशहूर वकील, रायसभा सांसद और कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक सिंघवी ने इसे असंवैधानिक, गैर-भारतीय और तानाशाही जैसा बताया। उनका कहना है कि यह कानून विदेशी होने को ही अपराध बना देता है, क्योंकि यह बिना

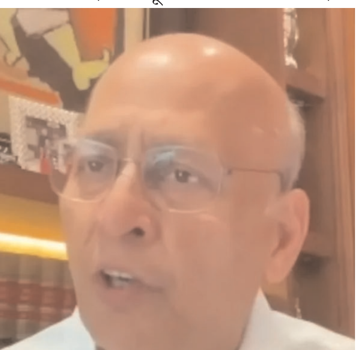

वजह, बिना सुनवाई और बिना जवाबदेही के लोगों को परेशान करने, जेल में डालने और देश से निकालने की खुली छूट देता है। द वायर को दिए 30 मिनट के इंटरव्यू में करण थापर से बात करते हुए डॉ. सिंघवी ने इस कानून पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने कहा, यह कानून विदेशियों को नियंत्रित करने के लिए नहीं, बल्कि सरकार को बेलगाम ताकत देने और डरावने नियंत्रण को सामान्य बनाने के लिए है। सिंघवी ने चेतावनी दी कि यह कानून सिर्फ विदेशियों तक नहीं रुकेगा। उन्होंने कहा, आज यह विदेशियों को निशाना बना रहा है, कल यह देश के लोगों पर भी लागू हो सकता है। इसका असर सीमा पर नहीं रुकेगा। उन्होंने कहा कि यह एक बहुत ही चिंताजनक मुद्दा है जिस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना मिलना चाहिए था। सिंघवी ने कहा कि वक्फ और ट्रम्प टैरिफ पर ध्यान केंद्रित करने के कारण इसे अनदेखा कर दिया गया।

सीलमपुर कुणाल मर्डर केस में आ रहा नाम

हाथ में पिस्टल.. खतरनाक इरादे.. कौन है लेडी डॉन जिकरा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीलमपुर इलाके में कल शाम को 17 साल के कुणाल की हत्या के मामले में लेडी डॉन जिकरा का नाम भी सामने आ रहा है। पुलिस इस हत्याकांड में जिकरा की भूमिका की जांच कर रही है। कुणाल अपने घर से दूध लेने के लिए निकला था तभी 4 नकाबपोशों ने उस पर चाकू से हमला किया। आरोपियों में से एक साहिल की पहचान कुणाल के घरवालों ने की है। घर से तकरीबन 100 मीटर की दूरी पर ही कुणाल की हत्या कर दी गई।

इस हत्याकांड में पुलिस को साहिल की तलाश है। साहिल और ज़िकरा भाई बहन हैं। साहिल अपनी नानी के घर पर ही रहता था। फिलहाल वहां ताला लगा है कोई भी घर में मौजूद नहीं है। सूत्रों के मुताबिक कल तक नाना नानी घर ही थे बाद में फरार हो गए। साहिल और जिकरा के घर से एक दो गली छोड़कर कुणाल का घर है।

सूत्रों के मुताबिक ज़िकरा के भाई पर

कुछ साल पहले हमला किया गया था। उस वक्त कुणाल और उसके जानकारों पर हमला करने का आरोप था। हालांकि ज़िकरा का भाई हमले में बच गया था और 307 का मुकदमा दर्ज हुआ था। कुणाल की हत्या उसी का बदला बताया जा रहा है। हालांकि ज़िकरा मौके पर थी या नही ये अभी जांच की जा रही है।

जिकरा नाम की लेडी डॉन गैंगस्टर हासिम बाबा की गर्लफ्रैंड जोया की बाउंसर थी। वह लगातार सोशल मीडिया पर हथियारों के साथ अपने वीडियो पोस्ट करती थी। होली के दिन भी इलाके में देसी कट्टा लेकर लहराती हुई नजर आई थी जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था।

पुलिस की गिरफ्त में हो या फिर कोर्ट में इसकी पेशी हो, हर जगह यह अपने वीडियो बनवाती और उसको सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इलाके में अपना दमखम दिखाती थी। इलाके लोगों का कहना है जिकरा के इर्द गिर्द लड़कों का जमावड़ा रहता था और तमाम लड़के उसके इशारों पर काम करते है।

नोएडा में बीच सड़क पर ट्रक ड्राइवर को मारी गोली

गौतम बुद्ध नगर (एजेंसी)। जिले के नोएडा में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां सेक्टर 63 इलाके में एक ट्रक ड्राइवर को बीच सड़क पर गोली मार दी गई। घटना के बाद से ट्रक ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बाद आनन-फानन में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि एक शख्स ने बीच सड़क पर अपनी कार खड़ी की थी। तभी ट्रक ड्राइवर ने कार को रास्ते से हटाने को कही। इसके बाद दोनों के बीच कहासुनी शुरू हो गई और आरोपी ने ट्रक ड्राइवर को गोली मार दी। दरअसल, पूरी घटना नोएडा के सेक्टर 63 थाना क्षेत्र की है। यहां पर रास्ता देने को लेकर हुए विवाद में एक ट्रक ड्राइवर को गोली मार दी गई। गोली लगने के बाद ट्रक ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हो गया है। पुलिस के एक प्रवक्ता ने शुक्रवार को घटना के बारे में जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि पूरा मामला गुरुवार की रात का है। यहां सेक्टर 63 थाना क्षेत्र के वाजिदपुर गांव के पास एक शख्स ने बीच सड़क पर अपनी कार खड़ी की थी। कार चालक की पहचान बाबू पंडित के रूप में हुई है। इसी बीच ट्रक ड्राइवर विकास ने हॉर्न बचाकर रास्ता देने के लिए कहा।

छत से सीधा चारदीवारी की नुकीली ग्रिल पर गिरा बच्चा

शरीर के आर-पार हुई छड़, आईसीयू में भर्ती

भुवनेश्वर (एजेंसी)। शहर के ढ्ढत्रष्ट विलेज इलाके में आज एक दिल दहला देने वाला हादसा सामने आया है। यहां 13 साल का एक बच्चा छत से सीधा ग्रिल पर गिर गया। इस हादसे में ग्रिल बच्चे के शरीर में फंस गई। बच्चे की पहचान सोहन डिगाल के रूप में हुई है, जो कंधमाल जिले का रहने वाला है। घटना उस समय हुई जब वह छत पर सूख रही अपनी स्कूल की ड्रेस लेने गया था। कपड़े निकालते समय वह अपना संतुलन खो बैठा और नीचे गिर गया। दुर्भाग्यवश, नीचे की ओर लगी लोहे की नुकीली ग्रिल में वह बुरी तरह से फंस गया।

मिली जानकारी के मुताबिक ऊपर से गिरकर ग्रिल में फंसते ही सोहन चींख उठा, जिसे सुनकर आस-पास के लोग दौड़े। संयोग से उस वक्त सेक्रेटेरिएट फायर स्टेशन की टीम इलाके में पहले से मौजूद थी। ये लोग सुबह आए आंधी-तूफान से हुए नुकसान का जायजा ले रहे थे। जैसे ही उन्होंने बच्चे की चीखें सुनीं, वह भी तुरंत मौके पर पहुंचे। फायर ब्रिगेड की टीम ने बिना समय गंवाए कटर मशीन से ग्रिल को काटा और बड़ी सावधानी से सोहन को बाहर निकाला।

हादसे के बाद सोहन को आनन-फानन में तत्काल एम्स भुवनेश्वर में भर्ती कराया गया। यहां सोहन का

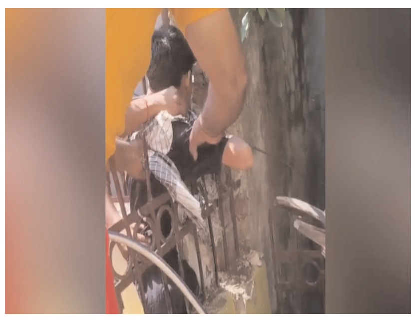

इलाज किया जा रहा है। डॉक्टरों का कहना है कि सोहन की हालत नाजुक बनी हुई है। उसे आईसीयू में रखा गया है और लगातार इलाज चल रहा है। बच्चे की हालत के बारे में एम्स ने कहा है कि बच्चे के ऑपरेशन के बाद अभी उसे बाल चिकित्सा सर्जरी आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है और बच्चे की हालत अब स्थिर है। वहीं सोहन का परिवार इस हादसे से गहरे सदमे में है। सभी उसकी सलामती के लिए दुआ कर रहे हैं। स्थानीय लोग भी इस घटना से स्तब्ध हैं और बच्चे के जल्द ठीक होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

बेटी की सगाई में केजरीवाल ने जमकर किया डांस

सामने आया वीडियो

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अरविंद केजरीवाल डांस एक मंच पर डांस करते दिख रहे हैं। दरअसल ये वीडियो अरविंद केजरीवाल और सुनीता केजरीवाल की बेटी हर्षिता केजरीवाल की शादी समारोह का है। बता दें कि हर्षिता केजरीवाल की आज यानी 18 अप्रैल को शादी है। इस वीडियो में अरविंद केजरीवाल मंच पर दिखाई दे रहे हैं और डांस कर रहे हैं। बता दें कि अरविंद केजरील की बेटी हर्षिता ने आईआईटी से पढ़ाई की है। उनकी शादी संभव जैन के साथ हो रही है।

बता दें कि संभव ने भी दिल्ली आईआईटी से हर्षिता के साथ ही पढ़ाई की है। संभव जैन और हर्षिता ने कुछ ही महीने पहले स्टार्टअप भी शुरू किया था। बता दें कि 17 अप्रैल को दिल्ली के शंगरीला होटल में हर्षिता और संभव की मेहंदी और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में कुछ लिमिटेड लोग ही शामिल हुए, जिसमें पंजाब के सीएम भगवंत मान, दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया। जानकारी के मुताबिक, 20 अप्रैल को हर्षिता केजरीवाल और संभव जैन के रिसेप्शन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

बता दें कि केजरीवाल जिस वीडियो में डांस कर रहे हैं, इसी शादी फंक्शन का है, जिसमें एक दूसरे वीडियो में पंजाब के सीएम भगवंत मान भी डांस करते दिखाई दे रहे हैं। बता दें कि अरविंद केजरीवाल के दो बच्चे हैं। बेटे का नाम है पुलकित केजरीवाल और बेटी का नाम हर्षिता केजरीवाल, जिनकी शादी हो रही है। सोशल मीडिया पर अरविंद केजरीवाल के डांस का जो वीडियो वायरल हो रहा है, उसमें पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ डांस करते दिख रहे हैं। वीडियो शेयर करते हुए ये दावा किया जा रहा है कि यह डांस का वीडियो बेटी की सगाई का है।

शादी के बंधन में बंधे भाजपा नेता दिलीप घोष

60 साल की उम्र में पार्टी सहयोगी रिंकू मजूमदार के साथ शादी की

पश्चिम बंगाल (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के नेता दिलीप घोष ने शुक्रवार को शादी कर ली है। दिलीप घोष ने 60 साल की उम्र में पार्टी सहयोगी रिंकू मजूमदार के साथ शादी की है। जानकारी के मुताबिक, दोनों की शादी का समारोह के समय करीबी रिश्तेदार और परिवार को लोग उपस्थित रहे। घोष के करीबी लोगों के मुताबिक, वह रिंकू मजूमदार को साल 2021 से जानते हैं। दिलीप घोष और रिंकू मजूमदार की शादी की कई तस्वीरें भी सामने आ गई हैं। दिलीप घोष और रिंकू मजूमदार ने शुक्रवार को शाम के समय न्यू टाउन इलाके में एक निजी समारोह में शादी की। जानकारी के मुताबिक, शादी का प्रस्ताव दुल्हन पक्ष ने रखा था। वहीं, दिलीप घोष की मां ने भी उन्हें शादी करने की सलाह दी थी। क्क्षढ्ढ के मुताबिक, दिलीप घोष के एक करीबी नेता ने बताया है कि घोष और मजूमदार

ने इस साल एक ढ्ढक्क्र मैच के दौरान शादी का फैसला किया था। दोनों मैच को देखने आए थे।दिलीप घोष की दुल्हन का नाम रिंकू मजूमदार है। रिंकू का घर न्यूटाउन में है। जानकारी के मुताबिक, रिंकू कोलकाता उत्तर उपनगरीय संगठनात्मक भाजपा जिला महिला मोर्चा से जुड़ी हैं। बताया जा रहा है कि दिलीप से बातचीत उनके भाजपा में शामिल होने पर आधारित है। बता दें कि रिंकू तलाकशुदा हैं। यह भी ज्ञात है कि उनका एक 25 साल का बेटा भी है। वह साल्टलेक में ढ्ढञ्ज क्षेत्र में काम करता है। दिलीप घोष के करीबी लोगों का दावा है कि वह अपनी मां के आग्रह पर शादी कर रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, उनकी मां ने दिलीप से कहा था कि अगर मैं नहीं रहूंगी तो तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? बताया जा रहा है कि मां की इन्हीं बातों ने 60 वर्षीय दिलीप को शादी करने के लिए प्रेरित किया। आपको बता दें कि दिलीप घोष पश्चिम बंगाल भाजपा के अध्यक्ष और बंगाल की मेदिनीपुर लोकसभा सीट से सांसद रह चुके हैं।

शादी में आर्टिफिशियल गहने मिलने पर हुआ हंगामा, बनाया बंधक

गाजियाबाद (एजेंसी)। जिले के मोदीनगर से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक शादी के मौके पर नकली गहनों को लेकर जमकर हंगामा हुआ। दुल्हन के पिता ने वर पक्ष पर गंभीर आरोप भी लगाए हैं। बताया जा रहा है कि करीब दो महीने पहले सगाई की रस्म पूरी हो गई थी। इसके बाद शादी के दिन भी काफी खुशी का

माहौल था। हालांकि ये खुशी का पल सिर्फ कुछ ही देर का था। यहां दूल्हा पक्ष की ओर से दुल्हन को चढ़ाने के लिए गहने दिए गए। घर की महिलाओं को गहने नकली होने का शक हुआ। जब इसकी जांच की गई तो गहने आर्टिफीशियल निकले। इस बात को लेकर बिना दुल्हन के ही बारात वापस लौट गई। दरअसल, पूरा मामला मोदीनगर थाना क्षेत्र के कादराबाद इलाके का है। यहां मनोज कुमार ने अपनी बेटी पिंकी रानी की शादी मेरठ के गंगापुरम कॉलोनी निवासी गौरव से तय की थी। करीब दो महीने पहले सगाई की रस्में भी पूरी हो चुकी थीं। मनोज कुमार का आरोप है कि गौरव के पिता ओमप्रकाश ने पहले 20 हजार रुपये लिए और फिर 30 हजार रुपये की दोबारा मांग की।

एग्जाम देने गए छात्रों का जनेऊ उतरवाया और कलावा को डस्टबिन में फेंका

शिवमोग्गा (एजेंसी)। कर्नाटका के शिवमोग्गा जिले के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में छात्रों से जनेऊ उतरवा लिया गया। साथ ही हाथ में बंधे कलावा को उतरवाकर डस्टबिन में फिकवा दिया गया। इंजीनियरिंग कॉलेज में

● शिक्षा मंत्री ने दिए जांच के आदेश

कॉमन एन्ट्रेंस टेस्ट यानी ष्टश्वञ्ज की परीक्षा देने गए कुछ छात्रों से जनेऊ और हाथों में पहने कलावा को उतारने के लिए कहे जाने से विवाद गर्मा गया। अखिल कर्नाटका ब्राह्मण सभा ने जिलाधीश से मुलाकात कर ऐसा करने वालों के खिलाफ एक्शन लेने की मांग की है। राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री एमसी सुधाकर ने मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई का भरोसा दिलाया है।ये घटना शिवमोग्गा के आदि चुनचुनगिरी पीयू कॉलेज परिसर में हुई है। बताया गया कि ष्टश्वञ्ज की परीक्षा देने पहुंचे तीन छात्रों को इसीलिए रोक लिया गया क्योंकि उन्होंने जनेऊ और हाथों में रक्षा सूत्र पहना हुआ था। गेट पर मौजूद गार्ड ने 2 लड़कों ने जनेऊ और रक्षा सूत्र (कलावा) खुलवा दिया, जबकि एक छात्र जनेऊ न खोलने पर अड़ गया। उसे 15 मिनट तक गेट पर ही रोक लिया गया। इसके बाद उसके हाथों में बंधे रक्षा सूत्र को उतरवा लिया गया, लेकिन जनेऊ के साथ उसे परीक्षा देने को दी गई।

पीड़ित छात्र अभिज्ञान के मामा ने कहा, मेरा भांजा ष्टश्वञ्ज के लिए आदि चुनचुनगिरी पीयू कॉलेज गया था। वहां गार्ड ने टी शर्ट के अंदर पहने जनेऊ और हाथों में पहने रक्षा सूत्र को उतारने को कहा। भांजे ने ऐसा करने से साफ मना कर दिया। भांजे ने कहा कि कि वो भले ही परीक्षा न दे लेकिन जनेऊ नहीं उतारेगा। इसके बाद 15 मिनट तक उसे बाहर बैठाया गया। इसके साथ ही पीड़ित छात्र के मामा ने बताया कि बाद में उसे जनेऊ के साथ परीक्षा देने की अनुमति दी गई लेकिन उसके हाथों से कलावा निकालकर उसे डस्टबिन में डाल दिया गया। जैसे ही उन्हें ये सूचना मिली कि मेरे भांजे से पहले 2 बच्चों का जनेऊ भी उतार लिया गया था। परीक्षा खत्म होने के बाद इन बच्चों ने अपने अभिभावकों को ये बात बताई। कुछ देर में संस्थान के गेट पर ब्राह्मण संगठन के लोग पहुंच गए और गार्ड से सवाल जवाब करने लगे। सूचना मिलते ही पुलिस भी वहां पहुंच गई और विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों को किसी तरह समझा बुझाकर वहां से भेज दिया गया। इसके बाद अखिल कर्नाटका ब्राह्मण महा संघ और अन्य ब्राह्मण संगठनों ने जिलाधिकारी को एक ज्ञापन सौंपा। इस ज्ञापन में कॉलेज प्रबंधन के इस रवैये की निंदा करते हुए कहा गया कि ब्राह्मणों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। हालांकि, पीयू कॉलेज के गार्ड ने पुलिस को दिए गए बयान में कहा कि उसने जो निर्देश प्रबंधन की ओर से दिए गए सिर्फ उसका पालन किया है।

मध्यप्रदेश में गिद्ध संरक्षण को मिल रही नई दिशा-मुख्यमंत्री डॉ.यादव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में वन्य जीव पर्यटन में नए आयाम जुड़ रहे हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गिद्धों का संरक्षण न केवल जैव विविधता की रक्षा के लिए आवश्यक है, अपितु पर्यावरण संतुलन बनाए रखने की दृष्टि से भी अनिवार्य है। प्रदेश में गिद्ध संरक्षण को भी नई दिशा दी जा रही है। भोपाल स्थित केरवा गिद्ध प्रजनन केन्द्र से 6 गिद्धों को बुधवार को पहली बार प्राकृतिक वातावरण में छोड़ा गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि राज्य सरकार ने गिद्धों सहित अन्य पशु पक्षियों की संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण के लिए सतत प्रयास किए हैं। एशिया से लुप्त हो रहे चीतों के पुनर्वास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका के देशों से चीते लाकर कूनो अभ्यारण में उनका संरक्षण एवं संवर्धन किया गया । मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्राकृतिक वातावरण में छोड़े गए गिद्धों पर जीपीएस ट्रैकर लगाए गए हैं,जिससे उनके आवागमन, व्यवहार एवं सुरक्षा की सतत निगरानी सुनिश्चित की जा सके।

मध्यप्रदेश टिम्बर डिपो नई दिल्ली में मई माह में सागौन काष्ठ की होगी नीलामी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश टिम्बर डिपो, न्यू टिम्बर मॉर्केट, कीर्ति नगर, नई दिल्ली में मई माह में सागौन काष्ठ की नीलामी की जायेगी। इस नीलामी में मध्यप्रदेश के विभिन्न वन मण्डलों से प्राप्त भारत की सर्वश्रेष्ठ सी.पी. टीक'' के गोल लट्ठों का विक्रय किया जायेगा। नीलामी में छोटी-छोटी मात्रा के लाट भी विक्रय किये जायेंगे, जो भवन निर्माण, आंतरिक सज्जा अथवा फर्नीचर के लिये उपयुक्त हैं। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (जनसम्पर्क एवं विक्रय) विक्रय डिपो मध्यप्रदेश वन विभाग नई दिल्ली ने बताया कि नीलामी संबंधी जानकारी के लिये दूरभाष क्रमांक 011-25939685, 8077873394 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

एमपी पॉवर कंपनी ने कार्मिकों के गृह भाड़ा भत्ते को किया पुनरीक्षित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एमपी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी ने कंपनी कार्मिकों के पुनरीक्षित गृह भाड़ा भत्ता का आदेश आज जारी कर दिया। पॉवर मैनेजमेंट कंपनी ने मध्यप्रदेश शासन वित्त विभाग के ज्ञाप क्रमांक एफ 4-1/2025/नियम/चार दिनांक 3 अप्रैल 2025 को जारी राज्य शासन के शासकीय सेवकों को देय गृह भाड़ा भत्ता के पुनरीक्षण संबंधी आदेश को यथावश्यक संशोधनों सहित 'शासकीय सेवक'के स्थान पर 'कंपनी कार्मिक'प्रतिस्थापित करते हुए ग्राह्य किया है। (1) 7 लाख अथवा इससे अधिक जनसंख्या के नगरों में निवासरत कंपनी कार्मिक को वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 के अनुसार देय मूल वेतन का 10 प्रतिशत देय होगा। (2) 3 लाख से अधिक पर 7 लाख से कम जनसंख्या के नगरों में निवासरत कंपनी कार्मिक को वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 के अनुसार देय मूल वेतन का 7 प्रतिशत देय होगा। (3) 3 लाख से कम जनसंख्या के नगरों में निवासरत कंपनी कार्मिक को वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 के अनुसार देया मूल वेतन का 5 प्रतिशत देय होगा। जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि जिन कार्मिकों को कंपनी आवास गृह आवंटित किया गया है अथवा जो किराया रहित कंपनी आवासगृहों में निवासरत हों अथवा जिन्हें किराया रहित आवास गृह के बदले और कोई भत्ता दिया जा रहा हो, उन्हें देय गृह भाड़ा भत्ता की पात्रता नहीं होगी। संविदा, तदर्थ, स्थायीकर्मी व दैनिक वेतन के आधार पर नियुक्त कार्मिकों को देय गृह भाड़ा भत्ता की पात्रता नहीं होगी। आदेश के अनुसार गृह भाड़ा भत्ता की स्वीकृति के संबंध में अन्य शर्तें पूर्वानुसार रहेंगी। आदेश के अनुसार गृह भाड़ा संबंधी दिशा निर्देश 1 अप्रैल 2025 से प्रभावशील होंगे।

सिकल सेल खत्म करने में हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी : राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि सिकल सेल खत्म करने में हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी है। सरकार और समाज की सहभागिता से ही सिकल सेल रोग का उन्मूलन होगा। सिकल सेल की जांच, उपचार, औषधि एवं जेनेटिक कार्ड वितरण में सरकार अच्छा कार्य कर रही है। समाज को भी आगे आना होगा। वर्ष 2047 में कोई भी बच्चा सिकल सेल रोग के साथ जन्म नहीं ले। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर व्यक्ति को मेरा भी योगदान हो इस भाव के साथ सिकल सेल उन्मूलन में जुड़ना होगा। उन्होंने बी.एम.एच.आर.सी. के सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों में डीएनए सिक्वेंसर मशीन प्रयोग शाला की स्थापना को सकारात्मक पहल बताते हुए सराहना की है।

राज्यपाल श्री पटेल भोपाल मेमोरियल अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र में आयोजित सिकल सेल पर केन्द्रित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। संस्थान द्वारा संगोष्ठी का आयोजन आनुवंशिक विश्लेषण प्रयोगशाला के लोकार्पण अवसर पर किया गया था। इससे पूर्व राज्यपाल श्री पटेल ने आनुवंशिक विश्लेषण प्रयोगशाला का लोकार्पण और अवलोकन किया। रोगियों को किट प्रदान की। बीएमएचआरसी के सक्षमता केन्द्र से ?दिग्दर्शिका के प्रकाशन का लोकार्पण किया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सिकल सेल को समाप्त करने में हर व्यक्ति सहयोग कर सकता है। प्रयास करना होगा कि सिकल सेल रोगियों का आपस में विवाह नहीं हो, क्योंकि उनके बच्चे शत प्रतिशत सिकल सेल रोगी होगें। ऐसे प्रयास भी किए जाए कि वाहक युगल भी आपस में विवाह नहीं करें। वाहक दंपतियों के प्रत्येक गर्भधारण में संतान के रोगी होने की सम्भावना 25 प्रतिशत होगी। विवाह होने पर गर्भावस्था मे प्रि-नेटल जांच अवश्य कराए। उन्होंने कहा कि यह भी बताना उतना ही जरूरी है कि सामान्य के साथ रोगी अथवा वाहक के विवाह में कोई बाधा नहीं है। इसी तरह सिकल सेल रोगियों, वाहकों को स्वस्थ जीवनशैली के लिए खान-पान एवं दिनचर्या संबंधी सावधानियों के बारे में भी सचेत करने मे समाज का सक्रिय सहयोग जरूरी है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सिकल सेल आनुवंशिक बीमारी है। इसलिए उन्मूलन जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है। हमारे वैज्ञानिकों ने जीन स्तर के विश्लेषण के द्वारा रोग की जड़ तक पहुँचकर रोग उन्मूलन के लिए कार्य करने का अभूतपूर्व अवसर उपलब्ध कराया है। प्रयोग शाला सिकल सेल रोग की विलक्षणता से उत्पन्न चुनौतियों और जटिलताओं को समझने और समाधान खोजने में सहायक होगी। इसकी विशेषताओं से ऐसा प्रतीत होता है कि यह मशीन सिकल सेल रोग की गम्भीरता के पूर्वानुमान और व्यक्तिगत चिकित्सा शोध के क्षेत्र में नई क्रांति का सूत्रपात करेगी।जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि प्रदेश के सभी विभागीय छात्रावासों में छात्र-छात्राओं के प्रवेश अवसर पर सिकल सेल की जांच करायी जाएगी। उन्होने कहा कि राज्यपाल श्री पटेल पहले संवैधानिक मुखिया है जिन्होंने प्रदेश के कोने-कोने तक पहुँच कर वंचितो के दुख दर्द को समझा है। उनके नेतृत्व में प्रदेश के सिकल सेल रोग प्रभावितों के जीवन मे बड़ा सुधार हुआ है। प्रदेश सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों में देश में अग्रणी है, क्योंकि हमारे राज्यपाल श्री पटेल है। उन्होंने कहा कि राज्यपाल के सिकल सेल उन्मूलन महायज्ञ में जनजातीय कार्य विभाग ने भोपाल और इंदौर में 382 करोड़ रूपए के विशेषज्ञ संस्थानों के निर्माण के रूप में आहूति दी है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन संचालक डॉ. सलोनी सिडाना ने बताया कि प्रदेश सिकल सेल उन्मूलन कार्य होलोस्टिक दृष्टिकोण के साथ करने वाला देश का अग्रणी राज्य है। पहला राज्य है जहाँ दो से 20 वर्ष की आयु समूह का वैक्सीनेशन शुरू हुआ है। इंदौर, भोपाल में विशेषज्ञ शोध अनुसंधान के केन्द्र है। मिशन द्वारा सिकल सेल को खत्म करने के लिए तेज गति से स्क्रीनिंग और जैनेटिक कार्ड वितरण किया जा रहा है।

ताप विद्युत गृहों की ऊर्जा कुशलता से आयी ट्रिपिंग में कमी और घटी विद्युत उत्पादन लागत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के 4 ताप विद्युत गृहों ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में ऑपरेशन (संचालन) क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पूर्व की तुलना में अधिक उत्पादन किया। साथ ही विद्युत गृहों की ट्रिपिंग दर पूर्व की तुलना में कम हो गई। विद्युत गृहों के ऑपरेशन में ट्रिपिंग, विशिष्ट तेल की खपत में कमी, ऑक्जलरी कंजम्पशन महत्वपूर्ण मापदंड हैं। पॉवर जनरेटिंग कंपनी के चारों ताप विद्युत गृहों की 12 विद्युत यूनिट ने इन मापदंडों में महत्वपूर्ण उपलब्धिहासिल की है। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ताप विद्युत गृहों की इस उपलब्धि पर इंजीनियरों, तकनीशियनों और संचालन टीम को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि प्रभावी प्रबंधन नीति, तकनीकी उन्नयन व कड़ाई से ऑपरेशन नियमों का पालन करने से यह लक्ष्य हासिल किया गया। पॉवर जनरेटिंग कंपनी के ताप विद्युत गृहों की यूनिट में किए गए सुधार कार्य व बेहतर मेंटेनेंस के कारण ट्रिपिंग में उल्लेखनीय कमी आई है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में विद्युत गृहों में मात्र 85 ट्रिपिंग दर्ज की गईं। इससे पूर्व वर्ष 2019-20 में 150 ट्रिपिंग दर्ज होती रही हैं। पॉवर जनरेटिंग कंपनी द्वारा विद्युत उत्पादन लागत में कमी के लगातार प्रयास किए गए। इससे ताप विद्युत यूनिट की विशिष्ट तेल खपत वर्ष 2024-25 में 0.51 मिलीलीटर प्रति यूनिट रही। यह अब तक की न्यूनतम विशिष्ट तेल खपत है।

प्रदेश का पहला जिला नर्मदापुरम, जहां चारों प्रकार के रेशम का होता है उत्पादन : मंत्री श्री जायसवाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल ने कहा है कि नर्मदापुरम, प्रदेश का पहला जिला है, जहां चारों प्रकार के रेशम का उत्पादन होता है। नर्मदापुरम में टसर रेशम, मलबरी रेशम, इरी रेशम और मूँगा रेशम (गोल्डन सिल्क) का उत्पादन किया जाता है। ये चारों प्रकार के रेशम जिले में तैयार किए जाते हैं और देशभर में प्रसिद्ध हैं।

राज्यमंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि नर्मदापुरम में रेशम केंद्र है, जहाँ रेशम के धागे और कपड़ों का उत्पादन किया जाता है। रेशम केंद्र में अब परंपरागत डिजाइनों से हटकर नए डिजाइनों को शामिल करने की तैयारी की जा रही है। जिले में मालाखेड़ी में मध्यप्रदेश की पहली ककून मंडी है, जहाँ रेशम के ककून का बाजार लगता है। नर्मदापुरम जिले की महिलाएं रेशम उत्पादन से जुड़कर अपना सशक्तिकरण कर रही हैं। मढ़ई रेशम उत्पादन केंद्र को सिल्क टूरिज्म के लिए विकसित किया जा रहा है। रेशम के धागे का उपयोग करके दवाइयां भी बनाई जा रही हैं।

जिले में रेशम उत्पादन के विस्तार के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। नर्मदापुरम रेशम उत्पादन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र है और रेशम से संबंधित विभिन्न गतिविधियों और योजनाओं के साथ भी जुड़ा हुआ है।

राज्यमंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि नर्मदापुरम में रेशम का उत्पादन बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। जिले के किसानों को रेशम उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके।

रेशम उत्पादन के लिए जिले में अनुकूल जलवायु और परिस्थितियाँ हैं। किसानों को रेशम के कीड़ों का पालन करने और रेशम उत्पादन के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रेशम उत्पादन से किसानों को अतिरिक्त आय का साधन मिलेगा और जिले की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सरकार रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को हरसंभव सहायता प्रदान कर रही है। नर्मदापुरम में रेशम उत्पादन के बढ़ने से जिले के किसानों को लाभ होगा।

प्रदेश में चावल के परिवहन एवं भंडारण की गुणवत्ता की होगी कड़ी निगरानी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के विभिन्न जिलों के मध्य रेक/एलआरटी के माध्यम से चावल का परिवहन एक निरंतर प्रक्रिया है, जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रक्रिया की पारदर्शिता, गुणवत्ता और मानक संचालन प्रक्रिया के अनुरूप क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने अधिकारियों को निर्देशित किया है।

मंत्री श्री राजपूत ने अपर मुख्य सचिव खाद्य श्रीमती रश्मि अरुण शमी को कहा है कि पूर्व में जारी मानक संचालन प्रक्रिया के अनुपालन की जमीनी स्थिति की व्यापक समीक्षा की जाए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि एसओपी के पालन में प्रेषण अथवा प्राप्तकर्ता जिलों द्वारा किसी भी प्रकार की लापरवाही होती है, तो इससे अमानक गुणवत्ता के चावल के जमा होने की संभावना बन सकती है। इससे न केवल उपभोक्ताओं को नुकसान हो सकता है, बल्कि शासन की साख भी प्रभावित हो सकती है।

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने इस संदर्भ में आयुक्त, खाद्य के स्तर से एक विशेष जांच दल गठित करने के निर्देश दिए हैं। यह दल रेण्डम आधार पर प्रदेश के विभिन्न जिलों में चावल के परिवहन और भंडारण की संपूर्ण प्रक्रिया का औचक निरीक्षण करेगा। यह जांच दल संबंधित जिलों द्वारा की गई कार्यवाही का अभिलेखीय परीक्षण करेगा। इसमें प्रेषण व प्राप्ति रजिस्टर, परिवहन अनुबंध, गुणवत्ता परीक्षण रिपोर्ट, भंडारण स्थल का भौतिक सत्यापन आदि शामिल होंगे। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने स्पष्ट किया है कि विभाग द्वारा पूर्व में जारी मानक निर्देश एवं एसओपी सभी जिलों के लिए बाध्यकारी हैं। इसमें किसी भी स्तर पर की गई लापरवाही को गंभीरता से लिया जाएगा।

बिजली कार्मिक की मृत्यु पर आश्रित परिवार को मिलेगी सवा लाख रुपये अनुग्रह राशि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एमपी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी ने कंपनी की सेवा में रहते हुए कार्मिक की मृत्यु होने पर आश्रित परिवार को दी जाने वाली अनुग्रह अनुदान राशि का पुनरीक्षण करते हुए अधिकतम 1,25,000 रूपए करने का आदेश आज जारी कर दिया गया है।

एमपी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी ने किसी कंपनी कार्मिक की कंपनी की सेवा में रहते हुए मृत्यु होने पर उनके आश्रित परिवार को वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 में देय वेतन के छह गुना के बराबर, अधिकतम 1,25,000 अनुग्रह अनुदान राशि स्वीकृत करने का निर्णय लिया है।

बिछिया नदी के उद्गम स्थल को जीवंत बनाये रखने में ग्रामवासी सहभागी बनें - ग्रामीण विकास मंत्री श्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने मऊगंज जिले के खैरा ग्राम में बिछिया नदी के उद्गम स्थल में पूजा-अर्चना की। उन्होंने जल गंगा संवर्धन अभियान में आयोजित कार्यक्रम में नदी के उद्गम स्थल पर पुष्प अर्पित कर दुग्ध अभिषेक किया।

जन भागीदारी से जल संचयन के संकल्प के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में मंत्री श्री पटेल ने ग्रामीणजनों से संवाद करते हुए ग्रामसभा का शुभारंभ किया। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि बिछिया नदी के उद्गम स्थल में फेंसिंग कराकर वर्षाकाल में पौध-रोपण करें। उन्होंने कहा कि खैरा की पुण्य भूमि नदी का उद्गम स्थल है। यहाँ के निवासियों को भू-जल स्तर बनाये रखने के लिए इसे हरा-भरा बनाना होगा। पौध-रोपण से आने वाली पीढ़ी का भविष्य संवरेगा। भू-जल स्तर में आ रही कमी व जल संकट को चुनौती के तौर पर स्वीकार करते हुए इससे निपटने के लिए समवेत होने का उन्होंने आहवान किया। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि इस वर्ष तीन माह तक जल गंगा संवर्धन अभियान संचालित किया जा रहा है। जल संरक्षण व संवर्धन के कार्य प्राथमिकता से कराए जाकर पौध-रोपण की तैयारी व पुराने जल स्त्रोतों के संरक्षण व पुनर्रुद्धार के कार्य इस दौरान किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी पंचायतों में भवन बनाने, सामुदायिक भवन निर्माण व जनपद पंचायतों के भवन निर्माण के कार्य कराए जाएंगे। श्री पटेल ने कहा कि पंचायतों के कार्य की प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए। विभिन्न मदों से प्राप्त होने वाली राशि से पंचायतों में आवश्यकतानुसार कार्य कराए जाएं तथा आवास प्लस की सूची में पात्र हितग्राहियों के नाम शामिल कराएं। कार्यक्रम में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक देवतालाब श्री गिरीश गौतम, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, डीआईजी श्री राजेश सिंह चंदेल, कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन, एसपी दिलीप सोनी सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

प्रदेश में शत-प्रतिशत बच्चों का स्कूल में हो नामांकन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रयास होना चाहिये कि प्रदेश के शत-प्रतिशत बच्चों का स्कूल में नामांकन हो। इसके लिये उन्होंने टीम वर्क के साथ काम करने के निर्देश दिये। उन्होंने अनेक जिलों में अब तक कराये गये नामांकन की जानकारी प्राप्त की। स्कूल शिक्षा मंत्री ने कहा कि विभाग के जो अधिकारी-कर्मचारी श्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे, उनका सार्वजनिक रूप से सम्मान किया जायेगा। कार्य के प्रति गैर-जिम्मेदार रहने वाले अधिकारी और कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जायेगी। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह गुरुवार को मंत्रालय में वीडियो कॉन्फ्रेंस से विभागीय अधिकारियों से चर्चा कर रहे थे। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारी-कर्मचारी शैक्षणिक वर्ष 2025-26 में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर शिक्षा को नई दिशा दें। बैठक में स्कूल शिक्षा सचिव डॉ. संजय गोयल, आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती शिल्पा गुप्ता, संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह और विभागीय अधिकारी मौजूद थे। मंत्री श्री सिंह ने एक अप्रैल, 2025 से शुरू हुए प्रदेशव्यापी प्रवेश उत्सव की जिलेवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि अप्रैल अंत तक स्कूल जाने योग्य बच्चों का नामांकन हो जाये, यह सुनिश्चित किया जाये। मंत्री श्री सिंह ने स्कूलों में मध्यान्ह भोजन व्यवस्था की जानकारी भी ली। मंत्री श्री सिंह ने अतिथि शिक्षकों की पदस्थापना के लिये जल्द पोर्टल शुरू किये जाने के भी निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अतिथि शिक्षकों की आवश्यकता की मैपिंग का कार्य जल्द पूरा किया जाये। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने विभाग के हॉस्टल्स का निर्धारित टाइम टेबल बनाकर निरीक्षण व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि गर्ल्स हॉस्टल में सुरक्षा के इंतजामों की समीक्षा की जाये। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि स्कूलों के विभिन्न कार्यों में विधायक और सांसद निधि का उपयोग किया जाये। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि जिला और राज्य स्तर के अधिकारियों के बीच संभागीय अधिकारी कड़ी के रूप में काम करते हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारी अपने कार्य क्षेत्र का निरंतर दौरा करें। कार्यालयों में लंबित पेंशन और अनुकम्पा नियुक्ति संबंधी प्रकरणों का निराकरण प्राथमिकता के साथ किया जाये।

जनसहभागिता की अभिनव पहल, आइए मिलकर जल स्त्रोतों को सहेजें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अभिकल्पना को साकार करते हुए जल गंगा संवर्धन अभियान अब जन अभियान बन गया है। अभियान की अवधारणा जनसहभागिता से जल संरक्षण और संवर्धन पर केन्द्रित है। इस अभियान के अंतर्गत नवीन जल संग्रहण संरचनाओं के साथ पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल स्त्रोतों और जल वितरण प्रणालियों की साफ-सफाई जल स्त्रोतों के आस-पास पौध-रोपण के कार्य प्राथमिकता से किये जा रहे है। समाज की सहभागिता के लिये जल संरक्षण जागरूकता के विभिन्न कार्यक्रम पूरे प्रदेश में आयोजित किये जा रहे हैं।

दतिया जिले के उन्नाव बालाजी धाम/तीर्थस्थान की नदी पर वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, आम नागरिकों ने स्वच्छता कार्य किया एवं जल संरक्षण की शपथ भी दिलायी गई। नदी की गंदगी को कार्यकर्ताओं ने हटाकर नदी को स्वच्छ किया और सभी को संदेश दिया कि हर व्यक्ति अपने गांवों और पंचायतों में प्राचीन जल स्त्रोतों की सफाई करें एवं लोगों को उनके संरक्षण एवं संवर्धन के लिये जागरूक करें। मंदसौर जिले के पिपलिया मंडी अयोध्या बस्ती में जन अभियान परिषद ने कलश यात्रा निकालकर जल संरक्षण का संदेश दिया। पिपलिया मंडी के तालाब में कलश यात्रा के साथ ही श्रमदान किया गया। इस अवसर पर परिषद के संभाग समन्वयक, ब्लॉक समन्वयक, सामाजिक कार्यकर्ता, छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। उमरिया जिले की सक्रिय युवाओं की टोली द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत पाली नगर के ऐतिहासिक प्राचीन सगरा तालाब के हरिहर बाबा घाट में बैठकर जल संरक्षण गीत गाकर नागरिकों को जल को सहेजने के लिये जागरूक किया। विवाह के निमंत्रण के साथ भेजा जल संरक्षण का संदेश उमरिया जिले के विकासखंड मानपुर के ग्राम बचहा में नवाचार करते हुए विवाह के निमंत्रण के साथ जल संरक्षण का संदेश भेजा जा रहा है।

मेरा ईकेवायसी ऐप से राशन के पात्र हितग्राही खुद कर सकते हैं ई-केवायसी -खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में पीडीएस अंतर्गत उचित मूल्य की दुकानों से राशन प्राप्त करने वाले सभी हितग्राहियों की ई-केवायसी कराने के लिए 9 से 30 अप्रैल तक पूरे प्रदेश में अभियान चलाया जा रहा है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि हितग्राहियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मोबाईल फोन पर ई-केवायसी की सुविधा भी गुरूवार से उपलब्ध करायी जा रही है। इसके लिए मेरा ई-केवायसी ऐप प्रदेश में लांच किया गया है। इस ऐप के माध्यम से राशन लेने वाले वृद्ध, दिव्यांग एवं बच्चों सहित कोई भी हितग्राही किसी भी एन्ड्राइड मोबाईल फोन से अपना और अपने परिजन का आधार नम्बर ओटीपी दर्ज करके घर बैठे ई-केवायसी कर सकते हैं। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि ऐप के साथ ही राशन लेने वाले हितग्राहियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हर जिले में गांव और वार्ड स्तर पर ई-केवायसी कराने के लिए शिविर लगाये जा रहे हैं। शिविर में उचित मूल्य दुकान के विक्रेता, वार्ड प्रभारी, ग्राम पंचायत सचिव और रोजगार सहायक के दल द्वारा पीओएस मशीन को शिविर में ले जाकर हितग्राहियों के अंगूठे लगाकर उनकी ई-केवायसी की जा रही है।

बिजली का तार टूटा, खेतों में लगी आग

फसल और खलिहान जलकर राख, तीन गांवों में नुकसान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)
Mediaauditor.in

सतना में शुक्रवार को बिजली के तार टुटने से कई क्षेत्रों में आग लगने की धटनाएं हुई। इस हादसे में किसानों की गेहूं की फसल और खलियान जलकर राख हो गए।

रामपुर बघेलान क्षेत्र के बिहरा खाम्हा गांव में शुक्रवार दोपहर करीब 2.30 बजे बिजली का हाईटेंशन तार टूटकर सीधे एक गेहूं के खेत में गिर गया। तार गिरते ही आग ने तेजी से फैलते हुए खेतों और खलिहानों को अपनी चपेट में ले लिया। ग्रामीणों ने आग बुझाने की हर संभव कोशिश की, लेकिन तेज हवा और सूखे खेतों के कारण आग तेजी से फैलती गई।

खलिहानों में रखी गेहूं और राई की फसल पूरी तरह जल गई, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ।

समय पर बिजली कटौती नहीं की गई: ग्रामीणों ने इस हादसे के लिए बिजली विभाग की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया है। जानकारी के अनुसार, कोटर बिजील वितरण केंद्र से दोपहर 2.30 बजे बिजली आपूर्ति बहाल की गई, जिसके तुरंत बाद तार टूटकर खेत में गिरा। आम तौर पर विभाग दोपहर के समय बिजली सप्लाई रोक देता है, ताकि ऐसे हादसे न हों। लेकिन इस बार समय पर बिजली कटौती नहीं की गई, जिससे यह आगजनी की घटना हुई।

रैगांव थाना क्षेत्र के दो गांवों में लगी आग: रैगांव थाना क्षेत्र के निपनिया और नारायणपुर गांव भी इस हादसे से अछूते नहीं रहे। यहां एक छोर से लगी आग ने तेजी से फैलते हुए खेतों को अपनी चपेट में ले लिया। दोनों गांवों में तैयार फसलें जल गई, और नारायणपुर गांव में एक कच्चा मकान भी आग की चपेट में आ गया। स्थिति को काबू में करने के लिए दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। इस दौरान गांव के लोग भय और दहशत के माहौल में काफी देर तक सहमे रहे।

प्रतिवादी का सभी जगहों से दावा हुआ खारिज

3 डिसमिल जमीन के लिए किसान जवा तहसील कार्यालय का लगा रहा चक्कर

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

जवा/रीवा जिले के जवा अनुभाग कार्यालय से आये दिन नए नए कारनामे सामने आते रहते है चाहे वो स्थगन आदेश का मामला हो या किसी की जमीन किसी के नाम कर देना या अनुभाग कार्यालय में एसडीएम का आना, अधिकारियों का समय से कार्यालय में न बैठना, मुख्यालय से बाहर निवास करना जैसे मामले प्रतिदिन देखने और सुनने को मिलते रहते हैं जिसका लगातार खबर का प्रकाशन भी होता है इसके बावजूद भी जिला कलेक्टर के द्वारा ध्यान नही दिया जाता है इसी बजह से जवा तहसील मुख्यालय के अधिकारी कर्मचारी मनमानी पर उतारू रहते हैं। जिसका भुक्तभोगी आमजनता व किसान होते है।

इसी तरह का मामला जवा तहसील अंतर्गत अतरैला सर्किल से सामने आया है जहा पर किसान का बुद्धी लाल प्रजापति अपनी मात्र 3 डिसमिल जमीन के कई वर्षो से न्यायालय तक का चक्कर लगाया और उसे हर जगह से उसके पक्ष में निर्णय मिला।

लेकिन अंत मे जवा तहसील में चल रहे प्रकरण में प्रतिवादी ने पैसे के दम पर अपने नाम दर्ज करा लिया। इस संबंध में किसान बुद्धीलाल प्रजापति के बेटे राजबहादुर प्रजापति ने बताया कि जमीन का प्रकरण जवा तहसील में कई वर्षो से चल रहा था इसके बाद एसडीएम कोर्ट, जिला कलेक्ट्रेट और कमिश्नर कोर्ट में चला जिसमे प्रतिवादी ने जो दावा किया था वो खारिज होता गया। फिर मजिस्ट्रेट कोर्ट में दावा किया गया जहा से भी खारिज कर दिया।

इसके बाद 27 मार्च को जवा तहसीलदार के द्वारा बिना सूचना के सुरेश प्रजापति, जगदीश प्रजापति और कमलेश प्रजापति के नाम 3 डिसमिल जमीन दर्ज कर दी गयी। अब अपील के लिए पंजी की नकल हेतु लोकसेवा गए तो 05/05/25 को देने को कह रहा है जबकि अपील 27 अप्रैल के पहले करना है। बता दे कि किसान हर जगह जीतने के बाद भ्रस्ट अधिकारियों के सामने वेबस हो गया और अब नकल के लिए चक्कर लगा रहा है। अब सवाल यही उठ रहा है क्या जानबूझ कर नकल नही दी जा रही है ताकि आगे किसान अपील न कर सके या मामला कुछ और ही है।

संजय टाइगर रिजर्व में पर्यटकों का सामना टाइगर

50 मीटर की दूरी पर अचानक दिखे बाघ से डरे सैलानी...

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सीधी जिले के संजय टाइगर रिजर्व में शुक्रवार को जंगल सफारी पर गए पर्यटकों की गाड़ी से महज 50 मीटर की दूरी पर एक बाघ सामने आ गया। यह घटना दोपहर के समय की है। सफारी पर निकले पर्यटक जब एक मोड़ पर पहुंचे। तभी झाड़ियों से निकलकर बाघ सड़क पर आ गया। बाघ ने बिना किसी हलचल के शांति से सड़क पार की और दूसरी तरफ के जंगल में चला गया। गाड़ी में बैठे पर्यटक पहले डर गए, लेकिन बाद में इस नजारे को देखकर खुश हो गए। पर्यटकों ने इस पल को अपने मोबाइल में कैद किया। कई लोगों ने इसे जंगल सफारी का असली अनुभव बताया।वन विभाग ने इस घटना के बाद पर्यटकों से सफारी के दौरान सावधानी बरतने और जानवरों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील की है। संजय टाइगर रिजर्व अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता है। यह घटना एक बार फिर साबित करती है कि जंगल की सबसे बड़ी खूबसूरती उसकी अप्रत्याशितता में है।

साहब कहां से आ रही है इनकी तनख्वाह!

सरकार ने नहीं की नवीन भर्ती तो अधिकारी खुद से ही प्रायवेट कर्मचारी रख करा रहे काम

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरकारी कंप्यूटर से छेड़छाड़ करते थाना प्रभारी महोदय के शागिर्द, दिसंबर और मार्च क्लोजिंग के बाद भी नहीं खत्म हो रहा काम का टोटा

रीवा। मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा पुलिस विभाग के कर्मचारियों को बेहतर सुविधा दिलाने नित नए प्रयास किए जा रहे हैं मगर सरकार ने विभाग में बल की कमी को अक्सर नजरअंदाज ही किया है जिसकी वजह से मध्य प्रदेश पुलिस की वर्दी में तैनात पुलिसकर्मियों को प्रायवेट व्यक्तियों के भरोसे पर काम करना पड़ रहा है जिसकी वजह से कभी कभार सरकारी खुफिया जानकारियां भी लीक हो जाती और अपराधियों को इस पर मदद मिल जाती है परंतु न तो प्रदेश सरकार के नुमाइंदे और न ही वरिष्ठ अधिकारी इस ओर किसी भी प्रकार का ध्यान दे पा रहे हैं। बल्कि कभी क्लोजिंग तो कभी काम की अधिकता बताकर ऐसे शागिर्दो को ढोया जा रहा है। दरअसल रीवा जिले का पुलिस बल भी इन दिनों प्रायवेट व्यक्तियों के भरोसे पर ही चल रहा है फिर चाहे पुलिस के सरकारी कामकाज में मदद की बात हो या अधिकारियों के निजी राजस्व में इजाफा करने का जिक्र हो हर स्थान पर प्रायवेट कर्मचारी बानर सेना के रूप में पुलिस के मददगार के तौर पर पहुंच जाते हैं और इससे उन्हें भी पुलिस की वर्दी को धौंस के रूप में दिखाने का साहस मिल जाता है। पुलिस विभाग में तैनात निजी कर्मचारियों की बात करें तो पुलिस विभाग के खुफिया तंत्र साइबर सेल से लेकर प्रत्येक थानों की कंप्यूटराइज्ड व्यवस्था में इनका सहयोग लगातार विभाग को मिल रहा है जिससे कई बार कुछ जानकारियां लीक होकर अपराधियों तक भी पहुंच जाती हैं और उन्हें अपराध में राहत मिल जाती है जिससे लगातार अपराधिक घटनाओं में भी इजाफा हो रहा है।

बताया जा रहा है कि जिले के मुख्य शहरी थानों के साथ ही ग्रामीण थानों में भी इन दिनों प्रायवेट कर्मचारियों के भरोसे पर ही पुलिसिया व्यवस्था बनी हुई है जहां तमाम सरकारी कार्यो की देखरेख से लेकर सांठ गांठ तक का काम करने में यह कर्मचारी अपनी रुचि दिखाते हैं जिससे साहब लोगों की भी मौज रहती है। और इसी मौज के चलते रीवा शहर का मुख्य थाना सिविल लाइन भी कंप्यूटर उपयोग के लिए निजी व्यक्ति के भरोसे पर संचालित हो रहा है मगर अधिकारी कभी क्लोजिंग का बहाना बनाते हैं तो कभी काम की व्यस्तता मगर इसका हिसाब कोई नहीं ले पाता कि आखिर इस तरह के प्रायवेट कर्मियों की तनख्वाह कहां से रिलीज होती है।

सैलरी शासन के किस मद से रिलीज की जा रही?

जिले के तमाम थानों के साथ ही साइबर सेल के रूप में भी लगातार प्रायवेट कर्मचारियों का उपयोग पुलिस विभाग में किया जा रहा है परंतु इन कर्मचारियों की सैलरी शासन के किस मद से रिलीज की जाती है इसका कोई उल्लेख किसी भी दस्तावेज में नहीं है गुप्त सूत्रों की माने तो वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा अपनी जेब की राशि का उपयोग कर इस तरह के कर्मचारियों का भरण पोषण कराया जा रहा है।

दोपहर में चल रही गर्म हवा, लोग घरों में दुबके,डॉक्टरों ने कहा-खूब पानी पिएं

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

शहडोल में तापमान ने नया रिकॉर्ड बना दिया है। यहां शुक्रवार को पारा 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। यह इस गर्मी के सीजन में अब तक का सबसे ज्यादा तापमान है। दोपहर एक बजे से 14 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गर्म हवाएं चल रही हैं। इस वजह से लोग घरों में दुबके हुए हैं। स्थानीय निवासी इंद्रजीत पटेल के मुताबिक लोग जरूरी काम छोड़कर घरों में रह रहे हैं। स्थानीय स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. आदित्य ने बताया कि लू लगने के मामले बढ़ रहे हैं। उन्होंने लोगों को बाहर जाने से बचने और पर्याप्त पानी पीने की सलाह दी है। दोपहर तीन बजे के बाद आसमान में बादल छा गए हैं।मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि इससे गर्म हवाओं पर कुछ अंकुश लग सकता है। हालांकि तापमान में कमी की संभावना अभी कम है। सीएमएचओ डॉक्टर राजेश मिश्रा ने कहा कि प्रशासन लोगों को गर्मी से बचाव के उपाय बता रहा है। साथ ही पानी की कमी न हो, खूब पानी पीएं।

साइबर ठगों ने फर्जी बैंक खाते खोल

गूगल पे एजेंट बनकर ठगी की, दो आरोपी हिरासत में...

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

शहडोल में दो साइबर ठगों ने खुद को गूगल पे के एजेंट बताकर दुकानदारों के फर्जी बैंक खाते खोल दिए। पुलिस ने दोनों आरोपियों को हिरासत में ले लिया है। ये मामला बुढ़ार के एक कॉफी शॉप का है। आरोपी आदित्य उर्फ संगम मिश्रा और ऋषि चौधरी पिछले 15 दिनों से कॉफी शॉप में आ रहे थे। दुकान के मालिक हिरेंद्र विश्वकर्मा और उनके मित्र अभिषेक पनिका का विश्वास जीत लिया। दोनों ने खुद को गूगल पे का एजेंट बताया। दुकान में क्यूआर स्कैनर लगाने के बहाने आधार और पैन कार्ड की फोटोकॉपी ले ली। इसके बाद चार दिन तक दिखाई नहीं दिए। 15 अप्रैल को जब दोनों दुकान पर आए, तो उन्होंने कहा- खाते में पैसे आ गए हैं। जब हीरेंद्र ने कियोस्क जाकर जांच की तो पता चला कि एनएसडीएल बैंक में उनके नाम से ऑनलाइन खाता खोला गया है। अभिषेक के नाम पर भी बिना बताए खाता खोला गया था। बुढ़ार थाना प्रभारी संजय जायसवाल के अनुसार यह एक सुनियोजित साइबर फ्रॉड है। पुलिस ने आदित्य और ऋषि को हिरासत में लेकर जांच शुरू कर दी है। यह घटना डिजिटल भुगतान के प्रति सतर्क रहने की याद दिलाती है। छोटी सी लापरवाही और अंधविश्वास का फायदा उठाकर ठग लोगों को आसानी से शिकार बना लेते हैं।

6 तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को नोटिस

समय पर पूरा नहीं किया काम , कमिश्नर ने की कार्रवाई...

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

शहडोल संभाग की कमिश्नर सुरभि गुप्ता ने राजस्व प्रकरणों में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर कार्रवाई की है। उन्होंने 6 तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। कमिश्नर ने संभाग के कलेक्टर्स के साथ बैठक में राजस्व मामलों की समीक्षा की। इस दौरान कई अधिकारियों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों में लापरवाही पाई गई। नोटिस पाने वालों में अनूपपुर के तहसीलदार, कोतमा वृत्त का नायब तहसीलदार और आमडाड का नायब तहसीलदार शामिल हैं। साथ ही पुष्पराजगढ़ के तहसीलदार, जैतहरा और जैतपुर के नायब तहसीलदार भी इसमें शामिल हैं। कमिश्नर गुप्ता ने बताया कि अधिकारियों को अपने काम समय पर और सही तरीके से पूरे करने होंगे। लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। स्थानीय अधिकारियों ने इस कदम का स्वागत किया है। हालांकि कुछ अधिकारियों ने माहौल प्रभावित होने की चिंता जताई है।

छतरपुर में 11वीं के छात्र पर तेजाब से हमला

स्कूटी को लेकर हुए विवाद में की मारपीट

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छतरपुर में शुक्रवार सुबह एक 11वीं के छात्र पर तेजाब से हमला किया गया। घटना सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के सौरा रोड पर हुई। पीड़ित की पहचान आदित्य श्रीवास 18 के रूप में हुई है, जो रघुनंदन विहार कॉलोनी का रहने वाला है। सुबह साढ़े 9 बजे आदित्य स्कूटी से जिम जा रहा था। गौतम नगर में शुभम सोनी अपनी मोटरसाइकिल मोड़ रहा था। इसी दौरान दोनों के बीच विवाद हो गया। शुभम ने आदित्य के साथ मारपीट की। फिर वो घर से तेजाब की शीशी लेकर आया और आदित्य पर फेंक दिया। इस हमले में आदित्य का दाहिना हाथ, पीठ और कपड़े जल गए।

जान से मारने की दी धमकी

शुभम ने आदित्य को धमकी दी कि अगर दोबारा स्कूटी घर के बाहर से निकली तो जान से मार देगा। इसके बाद वो मौके से फरार हो गया। आदित्य अपनी मां के साथ सिटी कोतवाली थाने पहुंचा। उसने शुभम के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद दांगी के अनुसार, घायल आदित्य को इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जनपद अध्यक्ष को फोन पर सीईओ की धमकी

दुश्मनी में गोली भी चल सकती है, हिरासत में लिए गए सीईओ; मंत्री बोले- मैं शर्मिंदा हूॅ

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मैहर जिले की अमरपाटन जनपद पंचायत की महिला अध्यक्ष को सीईओ ने फोन लगाकर धमकी दी। बातचीत का ऑडियो भी सामने आया है। इसके बाद गुरुवार देर रात जनपद अध्यक्ष माया पांडे ने सीईओ ओपी अस्थाना के खिलाफ के दर्ज कराया है। शुक्रवार दोपहर को अमरपाटन थाना पुलिस ने जनपद सीईओ अस्थाना को पन्ना जिले के देवराज नगर के पास से पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है। इससे पहले पुलिस सीईओ के सतना में विराट नगर स्थित घर भी गई थी। उनके वहां नहीं मिलने के बाद पुलिस को मुखबिर से टिप मिली कि अस्थाना को काली गाड़ी में देवराज नगर की तरफ जाते देखा गया है। इस पर पुलिस ने उनको ट्रेस करते हुए हिरासत में ले लिया। मामले पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल ने भी कड़ा रुख अपनाया है। शुक्रवार को मैहर पहुंचे पटेल ने कहा- विभाग का मंत्री होने के नाते मैं शर्मिंदा हूं। भाजपा सरकार में जनप्रतिनिधियों और आम जनता के सम्मान में कोई कमी नहीं होगी। विभागीय जांच के आदेश दिए गए हैं, ताकि मामले की पूरी तह तक जाया जा सके। मंत्री पटेल जल गंगा संवर्धन अभियान के लिए मैहर में थे। इसी दौरान उन्होंने यह बयान दिया। अध्यक्ष माया पांडे ने कहा कि आप मुझे धमकी दे रहे हैं, तो सीईओ ने कहा कि मैं अगर अपने रास्ते पर लौट आया तो कुछ भी हो सकता है। फोन पर धमकी मिलने के बाद गुरुवार सुबह जनपद अध्यक्ष ने अपने और परिवार की सुरक्षा की मांग की। देर रात पुलिस ने जनपद सीईओ के खिलाफ बीएनएस की धारा 79, 224, 351 (3) और 352 के तहत केस दर्ज किया। केस दर्ज होने के बाद सीईओ ओपी अस्थाना को अमरपाटन से हटा कर जिला पंचायत सतना अटैच कर दिया गया है। इसके साथ ही मैहर कलेक्टर रानी बाटड़ ने 3 सदस्यीय जांच टीम गठित की है। विवाद की शुरुआत 4 अप्रैल को हुई, जब सामान्य सम्मेलन में सीईओ देर से पहुंचे। इस पर सदस्यों ने निंदा प्रस्ताव पास कर शासन से कार्रवाई की मांग की। बाद में जनपद अध्यक्ष के पति विनीत पांडे ने सीईओ के खिलाफ ईओडब्ल्यू में आय से अधिक संपत्ति की शिकायत कर दी। इसी से भड़के सीईओ ने अध्यक्ष को फोन पर धमकी दी। जनपद सीईओ ओपी अस्थाना सतना में तैनाती के दौरान एक आरटीआई कार्यकर्ता से मारपीट की थी। इनके खिलाफ भ्रष्टाचार का भी एक मामला दर्ज है।

कचरे और कीचड़ के बीच बिक रही सब्जियां

व्यवस्था सुधारने की जिम्मेदारी कृषि उपज मंडी की है कमिश्नर

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सिंगरौली जिले में कलेक्ट्रेट कार्यालय के सामने स्थित सब्जी मंडी में गंदा पानी भरा है। जिससे मंडी में सब्जी बेचने आने वाले किसानों को दिक्कतें होती हैं। थोक व्यापारी इन सब्जियों को खरीदकर स्थानीय दुकानदारों और लोगों को बेचते हैं। आरोप है कि यहां पर सब्जियां कचरे के ढेर और बदबूदार पानी के बीच रखी जाती हैं। स्थानीय दुकानदार राम सिया साहू ने बताया कि वे खुद नहीं चाहते कि ग्राहकों को इस तरह की परिस्थितियों में सब्जियां बेचें। लेकिन प्रशासन ने उन्हें यही जगह दी है।

एक अन्य दुकानदार प्रमिला देवी के अनुसार, नगर निगम के अधिकारियों से कई बार साफ-सफाई की मांग की गई है। इस मामले में नगर निगम कमिश्नर डीके शर्मा ने कहा- सब्जी मंडी कृषि उपज मंडी के तहत आती है, इस वजह से यह उनकी जिम्मेदारी है। हालांकि उन्होंने मंडी सचिव से बात कर व्यवस्था सुधारने का आश्वासन दिया है। इस तरह की गंदे वाले स्थान पर बिकने वाली सब्जियां स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं। स्थानीय प्रशासन को तत्काल इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

विचार

अकाली नेताओं की गुटबाजी अकाल तख्त की सर्वोच्चता पर सवाल उठा रही

12 अप्रैल को तेजा सिंह समुंदरी हॉल में बुलाई गई बैठक के दौरान अकाली दल बादल के 567 में से 524 प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से सुखबीर सिंह बादल को एक बार फिर अकाली दल का अध्यक्ष चुना। इस चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए सुखबीर बादल का नाम तत्कालीन कार्यकारी अध्यक्ष बलविंद्र सिंह भूंदड़ ने प्रस्तुत किया था और अकाली दल बादल की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना ने इसका समर्थन किया था। अकाली दल बादल इस चुनाव को एक बड़ी जीत के रूप में पेश कर रहा है और सुखबीर सिंह बादल और उनके सहयोगियों ने अपने प्रतिद्वंद्वी 5 सदस्यीय समिति के सदस्यों और उनके सहयोगियों के खिलाफ सख्त आक्रामक रुख अपनाया है। यहां तक कि सुखबीर सिंह बादल ने भी अपदस्थ जत्थेदारों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। इसके चलते निकट भविष्य में अकाली दल के दोनों धड़ों के बीच एकता की उम्मीद की किरण भी गायब होती नजर आ रही है।

सुखबीर सिंह बादल से अलग हुआ गुट, जिसने खुद को अकाली दल सुधार आंदोलन का नाम दिया था, अकाल तख्त पर पेश होकर अकाली दल सरकार के दौरान सुखबीर सिंह बादल द्वारा सिख सिद्धांतों के खिलाफ लिए गए फैसलों और अन्य गलतियों के लिए अकाल तख्त के जत्थेदार को एक लिखित शिकायत सौंपी और मांग की कि सुखबीर सिंह बादल की सरकार के दौरान, सुखबीर बादल, उनके सहयोगियों और अकाली सुधार आंदोलन के नेता जो उन गलतियों में शामिल थे या उनका समर्थन करते थे, उन्हें तनखाइया घोषित किया जाना चाहिए।

इस शिकायत पर कार्रवाई करते हुए 2 दिसंबर को 5 जत्थेदारों ने सुखबीर सिंह बादल और अन्य अकाली नेताओं को धार्मिक और राजनीतिक तनख्वाह सुना दी। जिसे उस समय सभी दलों ने स्वीकार कर लिया और अकाल तख्त के आदेश के अनुसार सभी दलों ने धार्मिक सजा पूरी कर ली। राजनीतिक तनख्वाह में सुधार आंदोलन को अपने गुट को समाप्त करने और सुखबीर सिंह बादल और उनके सहयोगियों के इस्तीफे को स्वीकार करने और अकाल तख्त द्वारा घोषित 7 सदस्यीय समिति के माध्यम से अकाली दल की भर्ती करके एक नया अध्यक्ष चुनने का आदेश जारी किया गया था। परन्तु अकाली दल बादल ने राजनीतिक तनख्वाह भुगतने से यह कह कर किनारा कर लिया कि धर्मनिरपेक्ष पार्टी होने के कारण यदि वह धार्मिक संस्था के आदेश मानते हैं तो पार्टी की मान्यता रद्द हो सकती है जबकि सुधार लहर के नेताओं ने अपना दल खत्म करने की घोषणा कर दी।

अकाली दल बादल ने 20 फरवरी से अपने दम पर भर्ती शुरू कर दी और 7 सदस्यीय समिति, 2 सदस्यों के इस्तीफे के कारण 5 सदस्यों की हो गई। तत्कालीन अकाल तख्त के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंह से अनुमति लेकर 18 मार्च से अकाली दल भर्ती की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई।

रामजी लाल सुमन के बिगड़ैल बयानों से योगी और अखिलेश दोनों की सियासी मुश्किलें बढ़ेंगी!

समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद और दलित नेता रामजी लाल सुमन ने मेवाड़ के प्रतापी राजपूत शासक राणा सांगा को गद्दार बताते हुए जो विवादस्पद बयान दिया है, और क्षत्रियों की अखिल भारतीय 'करणी सेना' ने जिस तरह से उसे जातीय नायकों के अपमान का विषय ठहराते हुए सुमन के घर पर धावा बोल दिया था, उस पर जारी प्रशासनिक और सियासी खानापूर्ति से यदि भारत गृहयुद्ध की आग में झुलस जाए तो किसी को हैरत नहीं होना चाहिए। योंकि यह सबकुछ पहले अमेरिकी-पाकिस्तानी एजेंडे और अब चीनी-बंगलादेशी एजेंडे के अनुरूप हो रहा है, जिसे भारत के कथित सेयूलर दलों के पृष्ठ पोषक अरब देशों का समर्थन प्राप्त है। समझा जाता है कि जब-जब भारत अपनी सही रणनीति के बल पर विकास की गति को प्राप्त करता है, तब-तब हमारे विघ्न संतोषी कुछ राजनेता विदेशी ताकतों की शह पर यहाँ जातीय और सांप्रदायिक उन्माद पैदा करने की कोशिश करते रहे हैं। यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि यहाँ की सियासी बयानबाजियां और उससे जुड़े साक्ष्य इस बात की चुगली करते हैं। ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि आखिर वोट बैंक की कुत्सित राजनीति में निर्लज्ज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरूपयोग करके कबतक शांतिप्रिय भारतीय समाज को झुलसाया जाता रहेगा7 योंकि कभी बादशाहों के इशारे पर, कभी ब्रिटिश नौकरशाहों के तिकड़म पर और आज भारत के अपने ही राजनेताओं की शर्मनाक शतरंजी चालों पर एक समाज को दूसरे समाज से भिड़ाया जाता है और अपना-अपना राजनीतिक उल्लू सीधा किया जाता है।

बता दें कि भारत में वामपंथियों की राजनीति वर्गवादी झड़प के हालात पैदा करके, समाजवादियों की राजनीति जातिवादी संघर्ष के हालात पैदा करके और कांग्रेसियों-राष्ट्रवादियों की राजनीति सांप्रदायिक दंगे के हालत पैदा करके खूब फली-फूली! लेकिन विकास के पैमाने पर भारत अपने पड़ोसी देश चीन से 1987 में आगे बढ़कर भी बाद के वर्षों में निरंतर पिछड़ता चला गया। यही वजह है कि समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन जैसे राजनेता एक बार फिर से विवादित बयान देकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। ऐसे विषैले नेताओं के खिलाफ स्पष्ट कार्रवाई नहीं होने से प्रशासनिक सुचिता और न्यायिक दूरदर्शिता भी अब सवालों के घेरे में है!

आप मानें या न मानें, लेकिन मौजूदा विवाद की राजनीतिक कीमत सपा नेता अखिलेश यादव के मुकाबले भाजपा नेता और उत्तरप्रदेश के मौजूदा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को कुछ अधिक अदा करनी पड़ेगी, क्योंकि वह अभी सत्ता में हैं। जिस तरह से आगरा में उनकी मौजूदगी को लेकर अखिलेश यादव ने निशाना साधा है, वह राजपूतों के खिलाफ अन्य समाज को भड़काने की गहरी साजिश है, जिसके दृष्टिगत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सतर्क हो जाना चाहिए और करनी सेना की गैरकानूनी हरकतों पर यूपी में अविलंब रोक लगानी चाहिए।

वहीं भाजपा को भी इस मसले को जरूरत से ज्यादा तूल देने से बचना चाहिए। क्योंकि यह सारी सुनियोजित बयानबाजी मुस्लिम शासकों के कुकृत्यों से दलित और ओबीसी हिन्दुओं का ध्यान भटकाने के लिए की जा रही है, जिसे उसे समझना होगा और इसकी मजबूत रणनीतिक काट निकालनी होगी। यदि भाजपा और योगी इस मामले को ज्यादा तूल देते हैं तो लोकसभा चुनाव 2024 की तरह अखिलेश के पीडीए यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक गठजोड़ को मजबूती मिलेगी, वहीं भाजपा के डीपीए यानी दलित, पिछड़ा, अगड़ा गठजोड़ को भी सियासी धक्का लगेगा।

वहीं अखिलेश यादव को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब यूपी में दलित नेत्री मायावती उनकी पार्टी के लिए मजबूत चुनौती बनी हुईं थीं और मुस्लिम वोटर भी बसपा-सपा में लगभग आधा-आधा बंट गए थे तब भी राजपूत समाज उनका मजबूत वोट बैंक रहा था। उन्हें पता होना चाहिए कि यह पूरी राजपूत जाति पहले कांग्रेसियों और फिर समाजवादियों की मजबूत वोट बैंक रही है। यह बात दीगर है कि अब केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सबल नेतृत्व के चलते राजपूत मतदाता भी राष्ट्रवादी मिजाज के हो चले हैं। इसलिए पूरी राजपूत जाति को सपा का विरोधी बना देना उनके लिए राजनीतिक नादानी साबित हो सकती है। इससे न केवल बसपा और कांग्रेस को सिर उठाने का मौका मिलेगा, बल्कि सवर्णों में भी उनका इमेज उनके पिता स्व. मुलायम सिंह यादव से ज्यादा खराब हो जाएगा।

ऐसा इसलिए कि हाल में ही सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने बौद्ध मठों के अवशेषों पर मन्दिरों के बने होने और उसे मुद्दा बनाने के जो खतरनाक संकेत दिए हैं, उससे साफ है कि वे अरब देशों और चीनी एजेंडे को देश में लागू करके सवर्ण हिन्दुओं को दलित हिन्दुओं और ओबीसी हिन्दुओं से भिड़ाने की योजना बना रहे हैं, ताकि हिन्दू-मुस्लिम दंगे की जगह जातीय दंगे शुरू हों और समाजवादियों के राजनीतिक आधार पर कोई आंच नहीं आए। भारतीय प्रशासन और न्यायपालिका को सिरफिरे नेताओं के इस खतरनाक इरादे से देश को बचाना होगा, अन्यथा महाभारत तय है।

कहना न होगा कि ये वही विदेशी एजेंट लोग हैं जिन्होंने 1977 में इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाई थी। तब मोरारजी देसाई पर अमेरिकी सीआईए एजेंट होने के आरोप लगे थे जो बाद में देश के प्रधानमंत्री तक बने। भले ही सरकार चलाने में विफल रहे और बदले गए। फिर इन्हीं जैसे नेता लोगों ने 1989 में राजीव गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाई7 और अब 2029 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति में ब्रेक लगवाने के लिए गृह युद्ध के हालात पैदा करने जैसी विषाक्त बयानबाजी कर रहे हैं।

बता दें कि सपा सांसद रामजी लाल सुमन ने दो टूक कहा है कि %%गड़े मुर्दे मत उखाड़ो, बरना भारी पड़ेगा। अगर तुम ये कहोगे कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर है तो फिर हमें भी यह कहना पड़ेगा कि हर मंदिर के नीचे बौद्ध मठ है। और जो लोग बाबा साहब को मानने वाले लोग हैं वो यदि मोहल्ले में जाकर ये प्रचार करना शुरू कर दें तो ये मामला बड़ा ही खतरनाक मामला बन सकता है।

वहीं आगरा में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने करणी सेना को चेतावनी देते हुए कहा कि आगामी 19 अप्रैल को पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव आगरा आ रहे हैं, जिसके बाद लड़ाई का मैदान तैयार होगा और दो-दो हाथ होंगे। एक तरफ 10 प्रतिशत लोग हैं और दूसरी तरफ 90 प्रतिशत सामाजिक न्याय की शक्तियां हैं, इसलिए विजय हमारी होगी7 इस लड़ाई को कोई माई का लाल नहीं हरा सकता।

उन्होंने करणी सेना को फर्जी सेना कहा और पूछा कि अगर मुसलमान में बाबर का डीएनए है तो तुम्हारे अंदर किसका डीएनए है ये भी बता दो। उन्होंने आगे कहा कि अभी कुछ दिन पहले ही एक बैठक हुई, जिसमें तोप तलवार हथियार रहे। उन्होंने याद दिलाया कि भरतपुर के राजा रहे सूरजमल की तलवार ने अंग्रेजों के सिर काटे पर कभी किसी गरीब कमजोर पर उनकी तलवार नहीं चली। क्षत्रिय का तो धर्म होता है कि कमजोर की रक्षा करना है और गरीब की मदद करना है।

वहीं वह आगे बोलते नजर आए कि हमने तो तीन सेना सुनी है- थल सेना, वायु सेना और जल सेना, लेकिन ये चौथी सेना कहां से पैदा हो गई है? करणी सेना के लिए सांसद ने कहा कि हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि चीन ने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया है। अरुणाचल प्रदेश को चीन अपने हिस्से में दिखाता है। ये जो करणी सेना के रणबांकुरे हैं वो हिंदुस्तान की सरहद पर चले जाओ और चीन से हमको बचाओ7 वरना दुनिया में तुमसे ज्यादा नकली कोई और हो नहीं सकता।

वहीं सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने करनी सेना वालों को ललकारते हुए कहा कि ये लड़ाई हम लोगों की लड़ाई नहीं है, बल्कि ये लड़ाई लंबी है। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन लोगों ने अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री न रहने पर मुख्यमंत्री आवास को गंगाजल से धुलवाया था। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन्होंने राजस्थान की विधानसभा में दलित नेता प्रतिपक्ष के मंदिर में चले जाने से मंदिर को गंगाजल से धुलवाया था।

सुमन जी ने कहा कि, हम कहते है कि हिंदुस्तान का मुसलमान बाबर को अपना आदर्श नहीं मानता है, वो मोहम्मद साहब को अपना आदर्श मानता है। हम कहना चाहते हैं कि जब-जब इस देश की इज्जत दांव पर लगी है, हिंदुस्तान के मुसलमान ने साबित किया है कि इस देश की मिट्टी से जितनी मोहब्बत हिन्दू को उतनी मोहब्बत मुसलमान को भी है। उन्होंने सवाल उठाया कि देश में वक्फ को लेकर कानून बनाया गया, जब किसी धर्म महजब की कमेटी बनती है तो उस कमेटी में उसी धर्म के लोग रहते हैं? वक्फ में तीन सनातनी रहेंगे, भाई क्यों रहेंगे और बौद्ध मठ का मामला चल रहा है?

आपको बता दें कि इससे पहले सपा सांसद ने राज्यसभा में अपनी बात रखते हुए राणा सांगा को लेकर विवादित बयान दिया था। हालांकि उनके इस बयान को राज्यसभा की कार्रवाई से हटा दिया गया, लेकिन इसे लेकर करणी सेना में जबरदस्त गुस्सा देखने को मिल रहा है। करणी सेना ने बीते शनिवार को राणा सांगा की जयंती पर आगरा में रक्त स्वाभिमान रैली भी की थी। इस दौरान भारी संख्या में लोग खुलेआम सड़कों पर तलवारें लहराते हुए दिखाई दिए थे।

क्या पटेल के सहारे कांग्रेस की नैया पार होगी?

गत 8-9 अप्रैल को कांग्रेस का अधिवेशन, गुजरात के अहमदाबाद में संपन्न हुआ। 1961 के बाद यह पहली बार है, जब पार्टी नेतृत्व ने गुजरात में कोई बड़ी बैठक की। इस आयोजन से कांग्रेस ने स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री 'लौहपुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल, जिनकी इस वर्ष 150वीं जयंती भी मनाई जाएगी, की विरासत भाजपा से वापस पाने की मुहिम छेड़ी है। सवाल उठता है कि सरदार पटेल जो गुजरात कांग्रेस के 25 वर्षों तक अध्यक्ष रहे, 1931 में राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व किया और जिन्हें 1946 में देश के अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में अधिकांश कांग्रेस समितियों का समर्थन प्राप्त था, उनका नाम कैसे पिछले 7 दशकों में कांग्रेस से हटकर भाजपा के साथ जुड़ गया?

वास्तव में, भाजपा से सरदार पटेल का व्यक्तित्व, राजनीतिक और वैचारिक जुड़ाव अपने भीतर उस यात्रा को समेटे हुए है जिसमें कांग्रेस के पतन का कारण भी निहित है। स्वतंत्रता तक कांग्रेस सही मायनों में एक राष्ट्रीय दल था। विभिन्न राजनीतिज्ञों में मतभिन्नता होते हुए भी एक-दूसरे के प्रति सम्मान था और उनमें संवाद भी होता था। तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे 'भारत रत्न' पंडित मदन मोहन मालवीय ने न केवल वर्ष 1915 में अखिल भारतीय हिंदू महासभा की स्थापना की साथ ही कांग्रेस में सक्रिय रहते हुए हिंदू महासभा के 5 विशेष सत्रों की अध्यक्षता भी कर चुके थे। सरदार पटेल ने संघ को 'देशभक्त' और 'मातृभूमि से प्रेम करने' वाला संगठन कहकर संबोधित किया था। गांधीजी ने पं. नेहरू को अपने पहले स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में 3 गैर-कांग्रेस नेताओं डा. भीमराव रामजी आंबेडकर, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और सरदार बलदेव सिंह को शामिल करने के लिए राजी किया। हालांकि यह जुड़ाव अधिक समय तक नहीं रहा। इसका कारण क्या था।

स्वतंत्रता के बाद सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण की घोषणा की जिसे गांधी जी का समर्थन मिला। पं. नेहरू इसके विरोध में थे लेकिन वह गांधी पटेल के रहते इस पर खुलकर बोलने की हिम्मत नहीं कर पाए। गांधी जी के सुझाव पर मंदिर का पुनर्निर्माण चंदे से हुआ। गांधीजी की हत्या (1948) और पटेल के निधन (1950) के बाद पं. नेहरू का असली रूप खुलकर सामने आ गया। उन्होंने अपने मंत्री और मंदिर का दायित्व संभाल रहे के.एम. मुंशी को फटकारा और 1951 में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद को इसके उद्घाटन में जाने से रोकना भी चाहा। इसी कालखंड से कांग्रेस के भीतर मूल भारतीयता का तत्व कम होने लगा तो उसमें भारत-हिंदू विरोधी वामपंथ से निकटता और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी। गांधी जी और पटेल ने कभी भी परिवारवाद को बढ़ावा नहीं दिया।

परंतु पं. नेहरू ने 1959 में अपनी सुपुत्री इंदिरा गांधी के हाथों में पार्टी की कमान सौंपकर इसका सूत्रपात कर दिया।

सरदार पटेल कैसे कांग्रेस में किनारे होते गए और कैसे भारतीय जनसंघ

(वर्तमान भाजपा) ने उन्हें अपनाया इसके कई पड़ाव हैं। 1946 में गांधी जी ने अपने 'निष्ठावान' पटेल के पक्ष में आए बहुमत आधारित लोकतांत्रिक निर्णय को पलटकर पं. नेहरू के प्रधानमंत्री बनने का रास्ता साफ कर दिया था।

गांधी जी ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह नेहरू को 'अंग्रेज' मानते थे और जानते थे कि पं.नेहरू किसी के अधीन काम नहीं करेंगे। गांधी जी और पटेल के बाद कांग्रेस कभी नेहरू-गांधी परिवार से ऊपर नहीं उठ पाई। जहां पं. नेहरू ने जीवित रहते हुए स्वयं को 1955 और इंदिरा गांधी ने 1971 में खुद को 'भारत रत्न' से नवाजा, वहीं सरदार पटेल को यही सम्मान (मरणोपरांत) गैर-नेहरू-गांधी परिवार से पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार ने 1991 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और मोरारजी देसाई के साथ दिया। गत वर्ष ही देश में आर्थिक सुधार लाने वाले पी.वी. नरसिम्हा राव को मोदी सरकार ने 'भारत रत्न' से सम्मानित किया था।

भारत के भौगोलिक-राजनीतिक एकीकरण में सबसे महत्वपूर्ण योगदान के चलते सरदार पटेल की जयंती (31 अक्तूबर) को देश में राष्ट्रीय एकता दिवस' के तौर पर मनाया जाता है। इसकी शुरूआत मोदी सरकार ने 2014 में की थी। पाठक इस बात से अनजान होंगे कि 1960-70 के दशक में दिल्ली से भारतीय जनसंघ के नेता और पूर्व सांसद कंवरलाल गुप्ता ने एक नागरिक मंच के माध्यम से सरदार पटेल की जयंती मनाने की शुरूआत की थी, जिसका साक्षी मैं भी रहा हूं। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बतौर मुख्यमंत्री, गुजरात में केवडिया स्थित सरदार पटेल के सम्मान में दुनिया की सबसे बड़ी लौह प्रतिमा को मूर्त रूप दिया। क्या विभाजन से पहले गांधी-पटेल-नेहरू युक्त कांग्रेस के मुस्लिम समाज से मधुर संबंध थे।

वर्ष 1937-38 में मुस्लिम लीग ने कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों में मुसलमानों पर अत्याचारों की जांच हेतु पीरपुर समिति का गठन किया था जिसने अपनी रिपोर्ट में कांग्रेस को 'सांप्रदायिक' बताया था। इसी दौर में गुजरात स्थित भावनगर में सरदार पटेल पर मस्जिद में छिपे जिहादियों ने घातक हमला कर दिया था, जिसमें वे बाल-बाल बच गए। कालांतर में अंग्रेजों और वामपंथियों के समर्थन से इसी पीरपुर रिपोर्ट को भारत के मजहबी विभाजन का आधार बनाया गया।

उस समय मुस्लिम समाज का बहुत बड़ा वर्ग पाकिस्तान के लिए आंदोलित था परंतु विभाजन के बाद उनमें से अधिकांश यहीं रह गए। ऐसे लोगों की नीयत पर सरदार पटेल ने कई बार सवाल उठाया था। यह दिलचस्प है कि जिन जुमलों के साथ आज कांग्रेस और उसकी प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोगियों द्वारा भाजपा (आर.एस.एस.) को 'मुस्लिम विरोधी' कहा जाता है वही संज्ञा, आजादी से पहले इकबाल-जिन्नाह की मुस्लिम लीग वामपंथियों-अंग्रेजों के सहयोग से कांग्रेस के लिए इस्तेमाल करती थी।यदि कांग्रेस को निराशाजनक वातावरण से बाहर निकलना है, तो उसे अपने मूल राष्ट्रवादी और सनातनी विचारों को पुनरू अंगीकार करना होगा।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने तोड़ी बैरिकेडिंग

नेशनल हेराल्ड मामले में कांग्रेस कार्यालय के बाहर प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरबा में नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने पुलिस की बैरिकेडिंग तोड़कर ट्रांसपोर्ट नगर स्थित कांग्रेस कार्यालय का घेराव किया। प्रदर्शन टीपी नगर चौक से शुरू हुआ। भाजपा कार्यकर्ता बैनर-पोस्टर लेकर नारेबाजी करते हुए कांग्रेस कार्यालय की ओर बढ़े। पुलिस ने कार्यालय के पास बैरिकेड्स लगा रखे थे। लेकिन कार्यकर्ताओं ने इन्हें तोड़ दिया। कार्यालय पहुंचकर उन्होंने सोनिया गांधी और राहुल गांधी का पुतला जलाया। प्रदर्शन के दौरान भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। पुलिस ने पुतला दहन के दौरान आग बुझाने का प्रयास भी किया, लेकिन प्रदर्शनकारियों को रोक नहीं पाई। भ्रष्टाचार और काले कारनामों की जांच हो - बीजेपी भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज शर्मा ने कहा कि कांग्रेस के भ्रष्टाचार और काले कारनामों की जांच हो रही है। इससे कांग्रेस बौखला गई है। नगर निगम की महापौर संजू देवी राजपूत ने कहा कि मां-बेटे और दामाद को जेल में होना चाहिए, जो अभी जमानत पर हैं। भाजपा नेता नरेंद्र देवांगन ने कहा कि उनकी पार्टी शुरू से ही भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ती आई है। कांग्रेस सरकार में जो भ्रष्टाचार हुए, वे अब सामने आ रहे हैं। इसी के विरोध में यह कार्यक्रम किया गया।

भाजयुमो ने सोनिया और राहुल गांधी का पुतला फूंका

कांग्रेस नेताओं पर कार्रवाई की मांग, पार्टी कार्यालय का घेराव टाला

सरगुजा भाजयुमो ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी का पुतला फूंका। नेशनल हेराल्ड के 2 हजार करोड़ रुपए के कथित घोटाले में कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी का नाम ईडी की चार्जशीट में शामिल किया गया है। भाजयुमो ने दोनों नेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। भाजयुमो ने कांग्रेस कार्यालय के घेराव का कार्यक्रम टाल दिया। कांग्रेस अध्यक्ष एवं नेता कार्यालय में गुड़ और पानी लेकर पहुंच गए थे। नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ ईडी की चार्जशीट के बाद कांग्रेस ने देशभर में प्रदर्शन करते हुए केंद्र सरकार और ईडी का पुतला फूंका था। वहीं, आज भाजपा के आह्वान पर भाजयुमो ने शुक्रवार को प्रदर्शन किया। अंबिकापुर के कलेक्टोरेट चौक पर भाजयुमो कार्यकर्ताओं ने सोनिया और राहुल गांधी का पुतला दहन किया और जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारी भाजयुमो पदाधिकारियों ने कहा कि नेशनल हेराल्ड मामले में दोषियों के ऊपर कठोर कार्रवाई हो। नेशनल हेराल्ड की संपत्ति कांग्रेस की नहीं है, उसमें कई शेयरधारक थे, लेकिन इसे कांग्रेस अपना बनाने की कोशिश कर रही है। इसका युवा मोर्चा पुरजोर विरोध करती है। प्रदर्शन में भाजयुमो के प्रदेश महामंत्री अंकित जायसवाल, जिला महामंत्री अंशुल श्रीवास्तव के साथ बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए। भाजयुमो ने पुतला दहन के साथ कांग्रेस कार्यालय के घेराव का ऐलान किया था। इसकी सूचना मिलने पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष बालकृष्ण पाठक सहित कांग्रेस कार्यकर्ता कांग्रेस कार्यालय में गुड़ और पानी लेकर पहुंच गए। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि देश और प्रदेश में बीजेपी की सरकार आने के बाद से बीजेपी कार्यकर्ताओं की गर्मी बढ़ गई है, इसलिए उन्हें गुड़ और पानी पिलाने कांग्रेस कार्यालय के पास व्यवस्था की गई थी, लेकिन बीजेपी के लोग कांग्रेस कार्यालय का घेराव करने नहीं पहुंचे।

कांग्रेस में जिला-अध्यक्षों की नियुक्ति अब इंटरव्यू से

एक्सपेरिमेंट गुजरात में, यहीं से भूपेश बघेल ऑब्जर्वर; छत्तीसगढ़ में भी हो सकता है लागू

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कांग्रेस में जिला अध्यक्षों को मिलने वाले पावर के बाद उनकी नियुक्ति को लेकर भी नया फॉर्मूला लागू हो गया है। गुजरात से इसकी शुरुआत राहुल गांधी ने की। जहां ऑब्जर्वर के इंटरव्यू के बाद जिला अध्यक्ष तय किए जाएंगे। यहां ऑब्जर्वर में से एक नाम छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल का भी है। ऐसे में अब ये फॉर्मूला छत्तीसगढ़ में भी लागू हो सकता है। पहले जिला अध्यक्षों की नियुक्ति का काम प्रदेश नेताओं की सिफारिश से होता था। गुजरात कांग्रेस ने नए फॉर्मूले को संगठन सृजन अभियान का नाम दिया। एआईसीसी ने हर जिले के लिए ऑब्जर्वर नियुक्त किए हैं, जो स्थानीय नेताओं से चर्चा करके दावेदारों के इंटरव्यू कर रहे हैं। पार्टी ने छत्तीसगढ़ से राष्ट्रीय महासचिव और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पूर्व मंत्री शिव डहरिया को गुजरात में ऑब्जर्वर नियुक्त किया है। इसके अलावा अन्य राज्यों से भी वरिष्ठ नेताओं को ऑब्जर्वर बनाकर गुजरात भेजा गया है। कांग्रेस ने हाल ही में गुजरात अधिवेशन में यह भी तय किया था कि जिला अध्यक्षों को संगठन में ज्यादा ताकत दी जाएगी। उन्हें टिकट वितरण की प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा।

कपड़े का फंदा बनाकर झूली

मेंगुपचुप का ठेला लगाती थी, सुसाइड नोट लिखा-कुछ बात हावय जेकर से तकलीफ है

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरबा जिले में एक युवती ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। नेहरू नगर में प्रीति चौहान 26 गुपचुप का ठेला लगाती थी। गुरुवार रात वह काम के बाद घर लौटी और सोने चली गई। शुक्रवार सुबह कपड़े के फंदे में लटका शव मिला। घटना बालको थाना क्षेत्र की है। मृतका की मां चमरा राम चौहान रेशम विभाग में कार्यरत है। सुबह जब वह देर तक कमरे से बाहर नहीं निकली, तो परिजनों ने छज्जा तोड़कर कमरे में प्रवेश किया। मौके से बरामद सुसाइड नोट छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखा गया है। नोट में लिखा है कि वह अपने माता-पिता और परिवार से बहुत प्यार करती है, लेकिन कुछ तकलीफों के कारण यह कदम उठा रही है। प्रीति 12वीं पास थी और बालको में गुपचुप (स्नैक्स) का ठेला चलाती थी। घटना वाली रात को वह अपनी दुकान बंद कर सीधे सोने चली गई थी। परिवार को लगा कि वह थकी हुई है।बालको पुलिस ने सुसाइड नोट को जब्त कर लिया है और मृतका के परिजनों का बयान दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मौत के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है।

36 ट्रेनें कैंसिल के बाद एक समर स्पेशल

गाड़ियां रद्द होने से नहीं मिल रही कंफर्म बर्थ

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर छत्तीसगढ़ से होकर जाने वाली 36 गाड़ियां कैंसिल करके बाद रेलवे ने एक समर स्पेशल ट्रेन चलाने का फैसला किया है। गर्मी की छुट्टियों की वजह से ट्रेनों में जबरदस्त भीड़ है। यात्रियों को कंफर्म बर्थ नहीं मिल रही है। इसे देखते हुए बिलासपुर से काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन (हैदराबाद) के बीच स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। 8 फेरों के लिए सुपर फास्ट साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन 12 मई से शुरू होकर 2 जून तक चलेगी। वर्तमान में काचीगुड़ा के लिए गिनती की 2 या 3 ही ट्रेन है, वह भी साप्ताहिक है। नियमित ट्रेन होने से क्षेत्र के लोगों को काफी राहत मिलती। बता दें कि इससे पहले रेलवे ने मुंबई-हावड़ा रूट पर चलने वाली 36 ट्रेनें 11 अप्रैल से 24 अप्रैल तक कैंसिल कर दी थी। ओडिशा, झारखंड, महाराष्ट्र, बंगाल जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल, बिलासपुर-झारसुगुड़ा के बीच कोतरलिया रेलवे स्टेशन यार्ड को चौथी लाइन से जोड़ने का काम किया जा रहा है।

मेयर, कलेक्टर, चुनाव ऑब्जर्वर को नोटिस

कांग्रेस प्रत्याशी बोले- विधानी का जाति प्रमाणपत्र फर्जी, 1.5 करोड़ खर्च किए, कोर्ट ने मांगा जवाब

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश सिराजुद्दीन कुरैशी ने मेयर पूजा विधानी को नोटिस जारी किया है। साथ ही कलेक्टर, चुनाव ऑब्जर्वर, एडिशनल कलेक्टर, निर्वाचन आयुक्त के साथ ही 6 अन्य मेयर प्रत्याशियों को भी नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। कांग्रेस के मेयर प्रत्याशी प्रमोद नायक ने मेयर की जाति प्रमाणपत्र और लिमिट से अधिक खर्च करने को चुनौती दी है। उनकी याचिका को स्वीकार करते हुए सभी पक्षकारों को नोटिस जारी किया है। कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी प्रमोद नायक ने बताया है कि भाजपा की टिकट पर मेयर निर्वाचित हुई पूजा विधानी का जाति प्रमाण पत्र अवैध है। साथ उन्होंने चुनाव में तय लिमिट 25 लाख की जगह 1 करोड़ 5 लाख रुपए खर्च किए।प्रमोद नायक का कहना है कि खर्च को लेकर आपत्ति भी की गई। लेकिन, आपत्ति को जिला निर्वाचन अधिकारी ने खारिज कर दिया। उनका यह भी आरोप है कि राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव में 25 लाख खर्च करने का लिमिट तय किया था। लेकिन, पूजा विधानी ने 1 करोड़ 5 लाख रुपए खर्च कर दिए। याचिका में इस संबंध में तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। वहीं यह भी बताया गया कि चुनाव के दौरान अधिकारियों से कई शिकायतें की गईं, लेकिन उन्होंने निराकरण नहीं किया। शिकायतों का जवाब तक नहीं दिया गया।याचिका में कहा गया है कि निर्वाचन के दौरान नियमों की गंभीर अवहेलना की गई है। इस संबंध में लगातार लिखित सूचना और शिकायत की जाती रही। लेकिन अधिकारियों ने इनका समुचित निराकरण नहीं किया। कुछ शिकायतें ऐसी थीं, जिनमें निर्वाचन के नियमों के अनुसार समयावधि में निराकरण करना था। लेकिन अधिकारियों ने निराकरण नहीं किया बल्कि निर्वाचन प्रक्रिया जारी रख प्रतिवादी के निर्वाचित होने में भूमिका अदा की। याचिका में मेयर विधानी की निर्वाचन को शून्य घोषित करने, अधिकारियों पर कार्रवाई करने और याचिका से संबंधित खर्च प्रदान किए जाने की मांग की गई है।

हाईकोर्ट पहुंचा था मामला

बिलासपुर मेयर विधानी की जाति का विवाद हाईकोर्ट भी पहुंचा था। बसपा के उम्मीदवार ने रिटर्निंग ऑफिसर के द्वारा जाति प्रमाणपत्र उपलब्ध नहीं कराने पर हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। हालांकि, हाईकोर्ट ने चुनाव प्रक्रिया जारी होने और छानबीन समिति का मामला बताते हुए याचिका खारिज कर दी थी।

खारिज किए रिटर्निंग ऑफिसर ने आरोप...

पूजा विधानी के जाति प्रमाण पत्र को फर्जी बताने के आरोप को रिटर्निंग ऑफिसर ने खारिज कर दिया था। पीठासीन अधिकारी ने कहा था कि, चूंकि जाति का मामला छानबीन समिति का है और आपी के साथ कोई दस्तावेज पेश नहीं किया गया। इसलिए आवेदन खारिज किया कर दिया गया है।

ऑफिसर कुर्सी पर नहीं, भाजपा पदाधिकारी बैठे थे

कांग्रेस की आपी खारिज होने के बाद पार्टी के एडवोकेट प्रदीप राजगीर ने रिटर्निंग ऑफिसर अपर कलेटर आरए कुरुवंशी पर भाजपा के पदाधिकारी की तरह व्यवहार किए जाने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा था जैसे कुर्सी पर कोई अफसर नहीं, भाजपा के पदाधिकारी बैठे हैं। चुनाव खत्म हुए और पूजा विधानी मेयर बनीं। इसके बाद कांग्रेस प्रत्याशी ने जिला कोर्ट में मामले को लेकर जिला कोर्ट में याचिका लगाई है।

ठगी के लिए म्यूल अकाउंट, दो आरोपी गिरफ्तार

बलरामपुर पुलिस की कार्रवाई, अकाउंट में हुए लाखों रुपए के ट्रांजैक्शन...

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बलरामपुर कोतवाली पुलिस ने ऑनलाइन फ्रॉड के लिए इस्तेमाल किए जा रहे दो म्यूल अकाउंट धारकों को गिरफ्तार किया है। दोनों के बैंक अकाउंट में लाखों रुपए के ट्रांजैक्शन हुए हैं। बलरामपुर पुलिस ने दोनों के खिलाफ धोखाधड़ी का अपराध दर्ज किया है। जानकारी के मुताबिक, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के समन्वय पोर्टल के माध्यम से म्यूल अकाउंट की जानकारी बलरामपुर पुलिस को दी गई थी। थाना बलरामपुर क्षेत्र के बैंकों में दो युवकों द्वारा अकाउंट खुलवाए गए और इनका इस्तेमाल साइबर फ्रॉड के लिए करना पाया गया। पुलिस ने आरोपी नंदन कुमार रजक (20) निवासी बरदर एवं शोएब खान (31) ग्राम अमटाही, थाना सामरी पाठ को गिरफ्तार किया है। मामले की जांच में पता चला कि सामरी पाठ निवासी शोएब खान के द्वारा उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस शाखा के बैंक खाते में 8 लाख 22 हजार रुपए का अवैध ट्रांजैक्शन पाया गया है। यह राशि देश के अलग-अलग स्थानों से बैंकों से ट्रांसफर की गई है। इस संबंध में पूछताछ पर शोएब खान कोई जानकारी नहीं दे सका। वहीं नंदन कुमार रजक के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक, एचडीएफसी बैंक, स्टेट बैंक, केनरा बैंक में खुलवाए गए खातों में लाखों रुपए के ट्रांजैक्शन हुए हैं। नंदन कुमार रजक द्वारा इन बैंक खातों में लाखों के ट्रांजेक्शन का कोई जवाब नहीं दिया गया। दोनों मामले में पुलिस ने धारा 317(2), 317(4), 317(5), 318(4), 61(2)(क) का अपराध दर्ज किया। बलरामपुर थाना प्रभारी भापेंद्र साहू ने बताया कि दोनों युवकों को गिरफ्तार कर उन्हें कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

पीएम आवास योजना में पंजीयन की अंतिम तारीख नजदीक

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के लिए पात्र हितग्राहियों की पहचान के लिए विशेष अभियान शुरू किया है। 'मोर दुआर-साय सरकार' महाभियान के तहत 15 से 30 अप्रैल तक विशेष आवास सर्वेक्षण पखवाड़ा चलाया जा रहा है। बैकुंठपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक भैयालाल राजवाड़े ने बुधवार को कई गांवों का दौरा किया। उन्होंने ग्रामीणों से आग्रह किया कि जो परिवार अभी तक स्थायी प्रतीक्षा सूची या आवास प्लस सूची में शामिल नहीं हैं, वे 30 अप्रैल 2025 तक पंजीयन करा लें। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बस्तर जिले के घाटपदमपुर गांव से इस अभियान की शुरुआत की। अभियान के तहत 17 अप्रैल को विधायक और सांसद, 18 अप्रैल को जिला पंचायत अध्यक्ष और सदस्य तथा 19 अप्रैल को जनपद अध्यक्ष और सदस्य सर्वेक्षण करेंगे।

मासूम पर स्कॉर्पियो चढ़ाने वाला आरोपी 12 घंटे में रिहा

ड्राइविंग सीखने के दौरान रौंदा, थाने के बाहर शव रखकर हंगामा

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरिया जिले के बैकुंठपुर में गुरुवार को एक युवक ने 8 साल की बच्ची पर स्कॉर्पियो चढ़ा दी थी जिससे मासूम का मौत हो गई थी, स्थानीय लोगों ने आरोपी को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया था लेकिन उसी रात पुलिस ने आरोपी को छोड़ दिया। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। घटना वाले दिन ही करीब 12 घंटे बाद ही आरोपी आयुष पैकरा (23) को रिहा किए जाने को लेकर परिजनों ने शुक्रवार सुबह थाने का घेराव कर दिया। गेट के सामने बच्ची का शव रख कर प्रदर्शन किया और सख्त कार्रवाई की मांग की है। बैकुंठपुर के प्रेमाबाग कॉलोनी में आयुष पैकरा स्कॉर्पियो में ड्राइविंग सीख रहा था तभी रफ्तार तेज होने से गाड़ी अनियंत्रित हो गई और शासकीय आवास के क्वार्टर की बाउंडरी को टक्कर मार दी। उसी वक्त 8 साल की हिमांशी वहां खेल रही थी वह गेट और दीवार के बीच दब गई। परिजनों ने उसे तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि वाहन को आयुष पैकरा चला रहा था। उसके साथ एक अन्य युवक भी था। स्थानीय लोगों ने आरोपी को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

गैर इरादतन हत्या की धारा लगाने की मांग

पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। पोस्टमार्टम के बाद शुक्रवार सुबह प्रेमाबाग कॉलोनी के सैकड़ों लोग सिटी कोतवाली पहुंचे। वे बच्ची के शव के साथ थाने के बाहर धरने पर बैठ गए। प्रदर्शनकारियों ने आरोपी पर गैर इरादतन हत्या की धारा लगाने और सख्त कार्रवाई की मांग की।

पुलिस ने आश्वासन दिया...

स्थिति को नियंत्रित करने के लिए एसडीओपी राजेश साहू मौके पर पहुंचे। उन्होंने परिजनों से बातचीत की और एफआईआर में दर्ज धाराओं की जानकारी दी। एसडीओपी राजेश साहू ने निष्पक्ष और कठोर कार्रवाई का आश्वासन दिया। जिसके बाद परिजनों ने प्रदर्शन खत्म किया। पूरे क्षेत्र में शोक और आक्रोश का माहौल है।

फांसी में झूलता मिला युवा व्यवसायी का शव

बस स्टैंड के पास एसआर होटल में किया था चेक-इन

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुजा अंबिकापुर के बस स्टैंड के पास स्थित एसआर होटल में युवा व्यवसायी का शव फांसी के फंदे पर झुलता हुआ मिला। युवक ने गुरुवार दोपहर होटल में चेक-इन किया था। परिवार के लोगों ने उसकी खोजबीन की, लेकिन पता नहीं चल सका। होटल मालिक की सूचना पर पुलिस व फोरेंसिक एक्सपर्ट की टीम ने मौके पर पहुंच जांच की। मृतक ने एक सुसाइड नोट भी छोड़ा है। जानकारी के मुताबिक, मूलतः सीतापुर निवासी मनीष गुप्ता 34 बस स्टैंड के पास एसआर होटल में गुरुवार दोपहर पहुंचा और कमरा नंबर 103 बुक किया। उसने होटल संचालक से कहा कि उसके सीने में दर्द है और वह आराम करना चाहता है। शाम को होटल के कर्मचारियों ने रात में खाना खाने के लिए उठाने की कोशिश की, लेकिन रिस्पांस नहीं मिला। होटल संचालक ने बताया कि सुबह दरवाजा नहीं खोलने पर शक हुआ तो बगल के कमरे से रोशनदान से अंदर झांका तो मनीष गुप्ता का शव फांसी के फंदे पर झूलता मिला। इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी गई। सूचना पर फारेंसिक एक्सपर्ट कुलदीप कुजूर एवं कोतवाली पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। मनीष गुप्ता द्वारा छोड़ा गया सुसाइड नोट भी पुलिस ने जब्त किया है। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल भेजा।दुकानदार को पैसे RTGS करने निकला था मनीष गुप्ता वर्तमान में गंगापुर में किराए के मकान में रह रहा था। गंगापुर में ही उसने कपड़े की दुकान खोला था। 17 अप्रैल को वह गंगापुर स्थित घर से कपड़े की थोक दुकान संचालक को पैसे RTGS करने के नाम पर निकला था। वह दोपहर में दर्रीपारा स्थित ससुराल भी पहुंचा। वहां उसने पैसे RTGS करने की जानकारी दी और गंगापुर जाना बताकर निकला, लेकिन घर नहीं पहुंचा। देर शाम तक मनीष गुप्ता घर नहीं पहुंचा तो उसकी पत्नी ने अपने भाई संजय साहू को फोन किया। फोन नहीं उठाने पर वे कोतवाली थाने भी पहुंचे। पुलिस ने रात 11 बजे फोन को ट्रेस करने का आश्वासन दिया और सुबह थाने बुलाया था। वे थाने पहुंचे, इसके 10 मिनट बाद ही उन्हें मनीष गुप्ता का शव मिलने की सूचना मिली। बताया जा रहा है कि पिछले कुछ दिनों से वह मानसिक रूप से परेशान था। घरेलू कलह की बात भी सामने आ रही है। मृतक के साले दर्रीपारा निवासी संजय साहू ने बताया कि सुसाइड नोट में उसने इकलौते बेटे को लिखा है कि जो मैं किया हूं, वह तुम मत करना। कुछ पैसों के लेन-देन की बात भी लिखी है। उसने आत्महत्या के लिए स्वयं को जिम्मेदार बताया है। परिवारजनों ने बताया कि मनीष गुप्ता की सीतापुर में मोबाइल की दुकान थी। पारिवारिक हिस्से में मिली दुकान को उसने करीब दो वर्ष पूर्व ही बेच दिया था। वह अंबिकापुर में किराए के मकान में रह रहा था।

जर्मन-शेफर्ड खरीदने घर में विवाद..मां की हत्य

रुपए देने से मना किया तो हथौड़ी से सिर फोड़ा

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रायपुर में जर्मन शेफर्ड कुत्ता खरीदने के लिए एक सनकी बेटे ने अपनी मां की हत्या कर दी है। बेटे ने अपनी मां से 200 रुपए मांगे। जब मां ने मना किया तो उसने हथौड़ी से ताबड़तोड़ वार कर दिए। इस हमले में मां की मौत हो गई। आरोपी की पत्नी ने बीच बचाव किया तो उस पर भी सनकी आरोपी ने हमला कर दिया। फिलहाल पत्नी का अस्पताल में इलाज जारी है। मामला उरला थाना क्षेत्र के नागेश्वर नगर का है। उरला थाना प्रभारी बीएल चंद्राकर से मिली जानकारी के मुताबिक, आरोपी प्रदीप देवांगन 45 ई रिक्शा चलाता है।

यह घटना शुक्रवार सुबह की है। कुत्ता खरीदने की बात को लेकर घर में विवाद हुआ। पैसे नहीं देने पर प्रदीप देवांगन ने 70 साल की बुजुर्ग मां गणेशी देवांगन पर हमला किया। बुजुर्ग महिला पर जब हमला हुआ तो वह बिस्तर पर थी। बिस्तर के साथ ही फर्श पर भी खून फैल गया। हमले के बाद जब बुजुर्ग महिला चीखने लगी तो आरोपी की पत्नी रामेश्वरी देवांगन कमरे के अंदर आई। आरोपी ने गुस्से में अपनी पत्नी पर भी हमला कर दिया। आरोपी प्रदीप देवांगन के 3 बच्चें है। जिसमें एक 15 साल का लड़का, एक 13 साल की लड़की और एक 8 साल का लड़का है। वारदात के दौरान बड़े बेटे ने आस पड़ोस के लोगों को जाकर पूरी घटना बताई। जिसके बाद पड़ोसी घर के भीतर पहुंचे तो बुजुर्ग महिला की लाश और पत्नी जख्मी हालत में पड़ी हुई थी। इसके बाद पुलिस और एम्बुलेंस को सूचना दी गई। पुलिस को जांच पड़ताल में पता चला है कि आरोपी जर्मन शेफर्ड कुत्ते को पालने के लिए घर लाना चाहता था। कुत्ते की कीमत करीब 800 रुपए थी। आरोपी ने 600 रुपए जमा कर लिए थे। उसे 200 रुपए की जरूरत थी। इसी पैसों को लेकर उसने मां का मर्डर कर दिया।

जलवायु परिवर्तन और समुदाय आधारित आजीविका पर 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का हुआ शुभारंभ : मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वन, आजीविका से सम्बद्ध विषय है। जनजातीय क्षेत्र में अपार वन संपदा उपलब्ध है। इसके प्रबंधन में ध्यान रखना होगा कि विकास से जनजातीय वर्ग के हित प्रभावित न हो। भारतीय जीवन पद्धति वनों पर आधारित रही है। वनों के प्रबंधन में औपनिवेशिक सोच से मुक्त होने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विरासत से विकास और प्रकृति को जोड़ते हुए प्रगति और प्रकृति में सामंजस्य स्थापित कर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। पेसा एक्ट इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि जीवन का आनंद समग्रता में है, और प्रकृति आधारित जीवन जीने से कई समस्याओं का समाधान स्वत: ही हो जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जनजातीय क्षेत्रों में वन पुनर्स्थापना, जलवायु परिवर्तन और समुदाय आधारित आजीविका पर प्रशासन अकादमी में राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव तथा केन्द्रीय वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर तथा भगवान बिरसा मुंडा और वीरांगना रानी दुर्गावती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया। प्रदेश के महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया, केन्द्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उईके भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में वनों की स्थिति में सुधार और वन प्रबंधन में नवाचार के लिए के लिए वन विभाग को बधाई दी। उन्होंने कहा कि वन्य जीवों के संरक्षण से इको सिस्टम बेहतर हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल पर चीतों का पुनर्स्थापना हो पाया है। उन्होंने किंग कोबरा सहित रैप्टाइल्स की प्रजातियों के संरक्षण के लिए भी व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता जताते हुए कहा कि इससे सर्पदंश की घटनाओं में कमी आएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन क्षेत्र में विद्यमान जनजातीय समुदाय के पूजा और आस्था स्थलों के संरक्षण के लिए उचित व्यवस्था की जाएगी।

गुरुग्राम मेदांता अस्पताल में डिजिटल रेप केस

गुरुग्राम (एजेंसी)। गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में बंगाल की एयर होस्टेस से डिजिटल रेप केस में हरियाणा सरकार की एंट्री हो गई है। स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने गुरुग्राम सेहत विभाग के अधिकारियों से रिपोर्ट तलब कर ली है। जिसके बाद एयर होस्टेस की मेडिकल कराने का फैसला किया गया है। गुरुग्राम की चीफ मेडिकल ऑफिसर (ष्टरूह्र) डॉ. अलका सिंह डॉक्टरों का बोर्ड बनाएंगी। सोमवार को पीड़िता का मेडिकल कराया जाएगा। इसके लिए डॉ. अलका सिंह ने मेदांता अस्पताल से इलाज की डिटेल मंगाई है। उन्होंने एडमिट होने से लेकर डिस्चार्ज तक की हिस्ट्री मांगी है। सोमवार को ही मंत्री आरती राव को रिपोर्ट भेजी जाएगी। वहीं, इस केस की जांच के लिए पुलिस कमिश्नर विकास अरोड़ा ने गुरुवार शाम को स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम गठित की थी। इसकी अगुआई डीएसपी हेडक्वार्टर डॉ. अर्पित जैन करेंगे। वह खुद भी एमबीबीएस डॉक्टर हैं।

दिल्ली के सीलमपुर में युवक की हत्या से तनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीलमपुर इलाके में गुरुवार शाम करीब 8 बजे 17 साल के युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। इससे इलाके में तनाव है। परिजन और स्थानीय लोग सड़क पर चक्काजाम करके प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका आरोप है कि मुस्लिम लड़कों ने पुरानी रंजिश में हत्या की है। उधर, सीलमपुर में रहने वाले परिवारों ने घरों के बाहर हिंदू पलायन के पोस्टर लगाए हैं। पीएम मोदी और सीएम योगी से मदद की गुहार लगाई है। इन पोस्टर्स पर लिखा है, हिंदू पलायन कर रहा है, योगी जी मदद करो। यह मकान बिकाऊ है, हिंदू खतरे में है। पीड़ित ने हॉस्पिटल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। वह जे ब्लॉक, न्यू सीलमपुर का रहने वाला था। सीलमपुर थाने में हत्या का केस दर्ज किया गया है। हमलावर की तलाश में कई टीमें लगी हैं। पुलिस ने कहा- फिलहाल वारदात की वजह साफ नहीं है। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। चश्मदीदों से भी पूछताछ की जा रही है।

24 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपी-बिहार समेत उत्तर भारत के राज्यों में गुरुवार को भारी बारिश और बिजली-आंधी देखने को मिला। यूपी में बीते 24 घंटे में 13 लोगों की मौत हो गई है। बिजली-आंधी से अयोध्या में 6, बाराबंकी में 5, अमेठी और बस्ती में 1-1 व्यक्ति की मौत हुई है। आज यूपी के 37 जिलों में बारिश का अलर्ट है। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश में 2 और पश्चिम बंगाल में बिजली गिरने से एक व्यक्ति की मौत हुई है। मौसम विभाग ने लगातार दूसरे दिन 24 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और हरियाणा में तेज बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। इधर, राजस्थान के 9 जिलों में आज लू और धूलभरी आंधी की चेतावनी है। बीते दिन बीकानेर और बाड़मेर में पारा 45.1 और 45 डिग्री सेल्सियस रहा। हालांकि, 24 घंटे बाद तापमान में 2-4 डिग्री की गिरावट होने की संभावना है। मध्य प्रदेश के भोपाल, इंदौर समेत प्रदेश के 20 शहरों में दिन का तापमान 40 डिग्री के पार पहुंच गया।

गीता और नाट्यशास्त्र यूएनईएससीओ की लिस्ट में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीमद् भगवत गीता और भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को यूएनईएससीओ ने अपने मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया है। इसके साथ ही, अब हमारे देश के 14 अभिलेख यूनेस्को के रजिस्टर में शामिल हो गए हैं। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने ङ्ग पर इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा- यह वैश्विक सम्मान भारत के शाश्वत ज्ञान और कलात्मक प्रतिभा का जश्न है। ये कालातीत रचनाएं साहित्यिक खजाने से कहीं अधिक हैं। ये दार्शनिक आधार हैं जिन्होंने हमारे सोचने, महसूस करने, जीने और अभिव्यक्त करने के तरीके को बेहतर बनाया है।

मुर्शिदाबाद हिंसा- राज्यपाल मालदा पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस शुक्रवार को मालदा पहुंचे हैं। इसके बाद ट्रेन से मुर्शिदाबाद जाएंगे। यहां अगले 2 दिन राज्यपाल हिंसा प्रभावित इलाकों और शरणार्थी शिविरों का दौरा करेंगे। उन्होंने कहा- मैं जमीनी स्थिति का जायजा लूंगा। वहां जो कुछ भी हुआ चौंकाने वाला है। किसी भी कीमत पर शांति स्थापित होनी चाहिए। बोस ने कहा कि वह पीड़ितों से मिलने के लिए जा रहे हैं और इसकी रिपोर्ट केंद्र सरकार को

देंगे। इससे पहले गुरुवार को सीएम ममता बनर्जी ने राज्यपाल से दौरा स्थगित करने का अनुरोध किया था।

ममता ने कहा- मैं गैर-स्थानीय लोगों से अनुरोध करूंगी कि वे अभी मुर्शिदाबाद का दौरा न करें। राज्यपाल से कुछ और दिन प्रतीक्षा करने की अपील करूंगी। उधर, विश्व हिंदू परिषद हिंसा को लेकर पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग कर रही है।

तेलंगाना-हरियाणा के बाद आंध्र में भी एससी आरक्षण में सब-कोटा

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश ने गुरुवार को अनुसूचित जातियों आरक्षण के भीतर आरक्षण देने के लिए अध्यादेश जारी किया। राज्य में कुल 59 स्ष्ट जातियों को 15त्न आरक्षण मिलता है। पिछले साल सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को एससी और अनुसूचित जनजातियों कोटे में कोटा देने की अनुमति दी थी। आंध्र प्रदेश के अध्यादेश में सरकारी नौकरी और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण के लिए स्ष्ट जातियों को तीन ग्रुप में बांटा गया है। इसमें चंदाला, पाकी, रेल्ली, डोम जैसी 12 जातियों को 1 प्रतिशत आरक्षण के साथ ग्रुप-आई, चमार, मादिगा, सिंधोला,

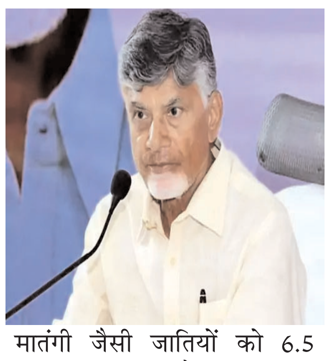

मातंगी जैसी जातियों को 6.5 प्रतिशत आरक्षण के साथ ग्रुप-आईआई में और माला, अदि आंध्र, पंचमा जैसी जातियों को 7.5 प्रतिशत आरक्षण के साथ ग्रुप-आईआईआई में रखा गया है।

केजरीवाल ने बेटी की सगाई में डांस किया

अमृतसर (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल की बेटी हर्षिता की गुरुवार रात को दिल्ली के शांगरी-ला होटल में सगाई हुई। मंच पर केजरीवाल ने अपनी पत्नी सुनीता के साथ डांस किया। सगाई के प्रोग्राम के कुछ वीडियो सामने आए, जिसमें केजरीवाल पुष्पा-2 मूवी के अंगारों का अंबर सा लगता है मेरा सामी गाने पर पत्नी सुनीता के साथ सेम डांस स्टेप करते दिखे। वहीं पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने

पत्नी गुरप्रीत कौर के साथ नची जो साड़े नाल गाने पर भांगड़ा किया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक केजरीवाल की बेटी हर्षिता की सगाई संभव जैन के साथ हुई है। संभव जैन कौन हैं, अभी इसका खुलासा नहीं हुआ है। सगाई के प्रोग्राम में परिवार और आम आदमी पार्टी के चुनिंदा नेता ही शामिल थे। पंजाब से मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के अलावा कुछ मंत्री भी प्रोग्राम में शामिल हुए। बताया गया है कि आज, शुक्रवार को भी दिल्ली के कपूरथला हाउस में एक प्रोग्राम हो रहा है। हालांकि, परिवार की तरफ से इसका खुलासा नहीं किया गया है। सगाई की तरह ये कार्यक्रम भी पूरी तरह निजी रखा गया है।

पूर्व आंध्र सीएम जगन के 27.5 करोड़ के शेयर जब्त

हैदराबाद (एजेंसी)। रेड्डी पर यह कार्रवाई 14 साल पुराने मनी लॉन्ड्रिंग के एक पुराने मामले में की गई है। जिसमें 'क्विड प्रो क्वो' (कुछ पाने के बदले कुछ देना) निवेश होने के आरोप हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और वॉयएसआर कांग्रेस प्रमुख वाईएस जगन मोहन रेड्डी की 27.5 करोड़ रुपए के शेयर अस्थायी रूप से जब्त किए हैं। यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग के 14 साल पुराने मामले में की गई है। जिसमें 'क्विड प्रो क्वो' (कुछ पाने के बदले कुछ देना) निवेश होने के आरोप हैं। ईडी की हैदराबाद टीम ने जगन की तीन कंपनियों कार्मेल एशिया होल्डिंग्स, सरस्वती पावर एंड

इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड और हर्षा फर्म में निवेश को जब्त किया है। इसके अलावा डालमिया सीमेंट (भारत) लिमिटेड की करीब 377.2 करोड़ रुपए की जमीन भी जब्त की गई है।

जापानी महिला अधिकारी से छेड़छाड़ मामले में कार्रवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने यौन शोषण के गंभीर आरोपों के चलते अपने एक सीनियर प्रोफेसर को बर्खास्त कर दिया है। यह घटना कुछ महीनों पहले विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम के दौरान घटी थी, जिसमें जापानी दूतावास की महिला अधिकारी के साथ छेड़छाड़ हुई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पीड़ित महिला ने जापान लौटने के बाद शिकायत दर्ज कराई थी, जो भारतीय दूतावास और विदेश मंत्रालय की तरफ से विश्वविद्यालय पहुंची थी। जेएनयू की इंटरनल कंप्लेंट्स कमेटी ने जांच के बाद आरोपों को सही पाया और फिर विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने प्रोफेसर की सेवाएं सभी लाभों सहित समाप्त करने की सिफारिश की। प्रोफेसर पर यह पहला मामला नहीं था। विश्वविद्यालय ने बताया कि आरोपी प्रोफेसर पर पहले भी कई शिकायतें मिल चुकी थीं। हालांकि, आरोपी प्रोफेसर को अपील का अधिकार है। उसके नाम और डिपार्टमेंट की जानकारी अभी तक सामने नहीं आई है। पर्यावरण विज्ञान विभाग के एक अन्य प्रोफेसर को भी रिसर्च प्रोजेक्ट में भ्रष्टाचार के आरोप में हटाया गया है। मामला सीबीआई को सौंपा गया है। दो गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को भी इस मामले में नौकरी से निकाला गया है।

चुनाव आयोग एआई के इस्तेमाल पर गाइडलाइन बना रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव प्रचार के लिए कंटेंट तैयार करने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। इसे देखते हुए चुनाव आयोग इसके दुरुपयोग पर रोक लगाने और बेहतर इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए गाइडलाइंस बना रहा है। इसकी झलक बिहार विधानसभा चुनाव में दिख सकती है। सूत्रों ने बताया कि राजनीतिक दलों, मीडिया और सोशल मीडिया के लिए जनरेटिव एआई संबंधी कंटेंट के बारे में बताना होगा। प्रचार में एआई के इस्तेमाल के नियम और तरीके साफ किए जाएंगे। फेक और डीपफेक प्रचार वीडियो और ऑडियो के बारे में भी दिशा-निर्देश बनाए जा रहे हैं।

इसका मकसद है कि एआई कंटेंट का इस्तेमाल करके मतदाताओं को भ्रमित या उनकी पसंद को गलत तरीके से प्रभावित न किया जा सके। साथ ही यह यह करने की कोशिश की जाएगी कि मतदाताओं की निजता या चुनाव की निष्पक्षता पर आंच न आए।

बंगाल में दिसंबर तक नौकरी पर रहेंगे हटाए गए टीचर्स

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के 25 हजार टीचर्स और नॉन-टीचिंग स्टाफ को नौकरी से निकालने के करीब 15 दिन बाद सुप्रीम कोर्ट ने बेदाग कैंडिडेट्स को 31 दिसंबर तक नौकरी पर बने रहने की अनुमति दे दी है।

इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ये समय राज्य सरकार को नया रिक्रूटमेंट पूरा करने के लिए दिया गया है। राज्य सरकार की दलील की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने ये फैसला गुरुवार को सुनाया।

दरअसल, कोर्ट ने इन टीचर्स के रिक्रूटमेंट के प्रोसेस को पूरी तरह से गलत बताते हुए इन सभी को बर्खास्त करने का फैसला सुनाया था। जिसके बाद बेदाग टीचर्स को कुछ दिन नौकरी पर बने रहने के लिए राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से सिफारिश की थी।

सीजेआई संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने कहा, 'राज्य सरकार अगर कुछ शर्तों का पालन करे तो हम कक्षा 9वीं से 12वीं तक के लिए असिस्टेंट टीचर्स के रिक्रूटमेंट को लेकर राज्य सरकार की सिफारिश मानने को तैयार हैं। फ्रेश रिक्रूटमेंट के लिए 31 मई 2025 को या उससे पहले एडवर्टाइजमेंट जारी हो जाना चाहिए। इसके बाद 31 दिसंबर 2025 तक इसका एग्जाम और रिक्रूटमेंट प्रोसेस पूरी तरह से खत्म हो जाना चाहिए।' बेंच ने यह भी कहा कि पश्चिम बंगाल एसएससी को 31 मई 2025 से पहले एफिडेविट फाइल करना होगा जिसमें 31 दिसंबर तक होने वाले रिक्रूटमेंट का एडवर्टाइजमेंट और पूरे शेड्यूल के बारे में बताना होगा ताकि रिक्रूटमेंट प्रोसेस समय पर पूरा हो सके। अगर ऐसा नहीं होता है तो कोर्ट इसे लेकर सख्त कदम उठाने के निर्देश देगा।

श्री हेमकुंट साहिब यात्रा की तैयारी शुरू

अमृतसर (एजेंसी)। उत्तराखंड में सिखों के प्रसिद्ध तीर्थस्थल गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब के रास्ते को बर्फ से साफ करने और तैयार करने के लिए भारतीय सेना की एक टीम गुरुद्वारा गोविंदघाट पहुंच गई है। यह टीम 19 अप्रैल से सेवा कार्य शुरू करेगी। करीब 15 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित हेमकुंट साहिब के कपाट 25 मई से श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे। इससे पहले सेना की एक टीम ने इलाके का सर्वेक्षण किया ताकि बर्फ हटाने और रास्ता बनाने का काम सुरक्षित और प्रभावी तरीके से शुरू किया जा सके। सेना द्वारा की गई रेकी के अनुसार अटलाकोटी ग्लेशियर पूरी तरह बर्फ से ढका हुआ है और यहां करीब 30 फीट बर्फ जमी हुई है। छोटे अटलाकोटी ग्लेशियर पर 10 फीट और हेमकुंट साहिब के आसपास 8 से 10 फीट बर्फ की परत जमी हुई है। गोविंद धाम से हेमकुंट साहिब तक 6 किलोमीटर लंबे मार्ग पर भी 2 से 7 फीट बर्फ जमी हुई है। हेमकुंट साहिब ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेंद्रजीत सिंह बिंद्रा ने बताया कि यात्रा की औपचारिक शुरुआत 22 मई को गुरुद्वारा श्री ऋषिकेश से पंच प्यारों की अगुआई में होगी।

सिब्बल बोले-उपराष्ट्रपति आज कोर्ट के फैसले पर सवाल उठा रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के जज के राष्ट्रपति को सलाह ना देने के बयान पर आपत्ति जताई। सिब्बल ने कहा, भारत में राष्ट्रपति नाममात्र का मुखिया होता है। राष्ट्रपति और राज्यपाल को सरकारों की सलाह पर काम करना होता है। मैं उपराष्ट्रपति धनखड़ की बात सुनकर हैरान हूं। काफी दुख भी हूं। उन्हें किसी पार्टी की तरफदारी करने वाली बात नहीं करनी चाहिए। सिब्बल बोले, लोगों को याद होगा कि जब इंदिरा गांधी के चुनाव के बारे में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया था, तो केवल एक जस्टिस कृष्ण अय्यर ने फैसला

सुनाया था। इंदिरा को सांसद पद से हटा दिया गया था। तब धनखड़ जी को यह मंजूर था, लेकिन अब सरकार के खिलाफ दो जजों की बेंच के फैसले पर सवाल उठाए जा रहे हैं। दरअसल, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट की उस सलाह पर आपत्ति जताई, जिसमें उसने राष्ट्रपति और राज्यपालों को बिलों को मंजूरी देने की समय सीमा तय की थी। धनखड़ ने कहा कि अदालतें राष्ट्रपति को आदेश नहीं दे सकतीं। उन्होंने कहा कि संविधान का अनुच्छेद 142 के तहत कोर्ट को मिला विशेष अधिकार लोकतांत्रिक शक्तियों के खिलाफ 24×7 उपलब्ध न्यूक्लियर मिसाइल बन गया है। जज सुपर पार्लियामेंट की तरह काम कर रहे हैं। सिब्बल बोले- देश को न्यायपालिका पर भरोसा सिब्बल ने कहा- आज के समय में अगर किसी संस्था पर पूरे देश में भरोसा किया जाता है, तो वह न्यायपालिका है। सुप्रीम कोर्ट को अनुच्छेद 142 की ताकत संविधान से मिली है।

जेपीसी अध्यक्ष बोले- वक्फ विधेयक असंवैधानिक हुई तो इस्तीफा दूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ विधेयक के असंवैधानिक होने के सवाल पर जेपीसी नेता और जाइंट पार्लियामेंट कमेटी के अध्यक्ष जगदम्बिका पाल ने कहा था कि- अगर समिति की रिपोर्ट कानूनी रूप से गलत पाई जाती है तो मैं अपने पद से इस्तीफा दे दूंगा। उन्होंने विपक्ष के धार्मिक भेदभाव फैलाने के दावों और वक्फ संपत्तियों और बोर्ड की सदस्यता के बारे में चिंताओं को नकारते हुए कहा कि वक्फ बोर्ड कोई धार्मिक निकाय नहीं है, बल्कि एक कार्यकारी निकाय है, एक वैधानिक निकाय है जो सिर्फ संपत्तियों की देखभाल करता है। वहीं, गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के

खिलाफ दायर याचिकाओं को लेकर एक अहम निर्देश जारी किया। कोर्ट ने कहा है कि अब इस मामले में सिर्फ 5 याचिकाओं पर ही सुनवाई की जाएगी, जबकि बाकी करीब 65 याचिकाओं को हस्तक्षेप या पक्षकार याचिकाओं के रूप में जोड़ा जाएगा। कोर्ट ने यह फैसला अदालत में ज्यादा भीड़ और कार्यवाही के दौरान होने वाली परेशानियों को ध्यान में रखते हुए लिया है। कोर्ट ने यह भी बताया कि जिन 5 याचिकाओं पर सुनवाई होगी, उन्हें खुद याचिकाकर्ताओं ने आपसी सहमति से नामित किया है

ताकि सभी की बात सामने रखी जा सके और सुनवाई व्यवस्थित ढंग से हो। इन 5 याचिकाओं में हैदराबाद सांसद असदुद्दीन ओवैसी की याचिका भी शामिल है। वहीं, कोर्ट ने केंद्र सरकार को जवाब दाखिल करने के लिए 7 दिन का वक्त दिया है। सरकार के जवाब के बाद याचिकाकर्ताओं को 5 दिन में जवाब देना होगा। अगली सुनवाई 5 मई को दोपहर 2 बजे होगी। केंद्र सरकार ने कोर्ट को आश्वस्त किया कि 5 मई तक किसी भी वक्फ संपत्ति (वक्फ बाय यूजर संपत्ति, पहले से पंजीकृत या अधिसूचना के जरिये घोषित) से कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी।

उन्हें डी-नोटिफाई भी नहीं किया जाएगा, न ही केंद्रीय वक्फ परिषद और वक्फ बोर्डों में किसी गैर-मुस्लिम की नियुक्ति की जाएगी। अगली सुनवाई तक कलेक्टर वक्फ संपत्ति को लेकर कोई आदेश भी जारी नहीं करेंगे। साथ ही कोर्ट ने मामले का कॉज टाइटल बदलकर 'इन रे- वक्फ अमेंडमेंट एक्ट' कर दिया है। इस मामले की सुनवाई सीजेआई संजीव खन्ना, जस्टिस पीवी संजय कुमार और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ कर रही है।

मुंबई इंडियंस की 6 मैचों में 4 हार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का सीजन जारी है। आईपीएल 2025 में इस समय जो टीमें शीर्ष पर हैं, उनमें चार टीमों में से तीन ने आईपीएल खिताब नहीं जीता है। वहीं मुंबई इंडियंस का हाल इस सीजन में काफी बुरा रहा है। इस सीजन में चेन्नई सुपर किंग्स की स्थिति भी ऐसी ही है। वहीं मुंबई इंडियंस के कप्तान मुंबई इंडियंस ने छह मैच खेलकर सिर्फ दो मैच ही जीते है। मुंबई इंडियंस के इस सीजन में कुछ मैच खेलने बाकी है। इन मैचों को जीतकर क्या मुंबई इंडियंस प्लेऑफ में पहुंचने के लिए जगह बना सकेगी। बता दें कि इस सीजन में मुंबई इंडियंस की शुरुआत चेन्नई सुपर किंग्स के साथ हुई थी। चेन्नई ने इस सीजन में चार विकेट से मुंबई को मात दी थी। मुंबई के कप्तान हार्दिक पांड्या इस मैच में कप्तानी नहीं कर रहे थे बल्कि टीम का नेतृत्व सूर्यकुमार यादव ने किया था।

दूसरे मैच में हार्दिक पांड्या की वापसी हुई है। इस मैच में हार्दिक के आने के बाद भी मुंबई गुजरात की टीम से मुंबई को मात मिली। टीम को इस सीजन की पहली जीत तीसरे मुकाबले में मिली थी। आईपीएल में मुंबई इंडियस ने तीसरे मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स को होम ग्राउंड पर आठ विकेट से हराया था। लखनऊ और आरसीबी के हाथों भी मुंबई को हार का सामना करना बड़ा था।

इससे पहले मुंबई इंडियंस को दूसरी जीत तब मिली जब दिल्ली को उसके होम ग्राउंड पर मुंबई ने पटखनी दी थी।

बता दें कि मुंबई इंडियंस को अभी आठ मुकाबले और खेलने है। अबतक छह मुकाबले खेलने के बाद मुंबई सिर्फ दो मैच जीतकर चार अंक हासिल कर सकी है। प्लेऑफ में पहुंचने के लिए मुंबई को कम से कम सात मुकाबले जीतने होंगे। अगर इससे कम मुकाबले मुंबई जीतेगी तो प्लेऑफ में पहुंचने के लिए उसे अन्य टीमों के प्रदर्शन पर भी निर्भर रहना होगा।

मैदान के बाहर भी लड़ रही आरसीबी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल फ्रेंचाइजी आरसीबी यानी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने उबर मोटो के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट में मुकदमा दायर किया है। आरसीबी ने आरोप लगाया है कि उबर ने अपने यूट्यूब विज्ञापन में उसके ट्रेडमार्क का अपमान किया है, जिसमें क्रिकेटर ट्रेविस हेड शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर ट्रेविस हेड आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए खेलते हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने अंतरिम निषेधाज्ञा की मांग करने वाली आरसीबी की अर्जी पर फैसला सुरक्षित रखा है। आरसीबी ने तर्क देते हुए सनराइजर्स हैदराबादा का वाणिज्यिक प्रायोजक होने के नाते उबर मोटो आरसीबी के ट्रेडमार्क या भ्रामक रूप से समान संस्करण का इस्तेमाल नहीं कर सकता। मुकदमे को बेतुका बताते हुए उबर के वकील ने निषेधाज्ञा के खिलाफ तर्क दिया है कि विज्ञापन वाणिज्यिक मुक्त भाषण के अंतर्गत आता है और इस पर निषेधाज्ञा नहीं लगाई जा सकती।

जबकि आरसीबी की ओर से पेश वकील श्वेताश्री मजूमदार ने कहा कि, उनके विज्ञापन करने के लाखों रचनात्मक तरीके थे, उन्होंने हमारे ट्रेडमार्क का इस्तेमाल क्यों किया? इसके लिए किसी ऐसे व्यक्ति की मदद लेना जो पहले हमारे साथ था।

धोनी-विराट के बाद अब रोहित शर्मा, वानखेड़े में हिटमैन का हुआ स्वैग से स्वागत

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में आज मुंबई इंडियंस का सामना सनराइजर्स हैदराबाद से हो रहा है। आईपीएल 2025 के इस 33वें मैच में मुंबई के कप्तान हार्दिक पंड्या ने टॉस जीता और पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। मुकाबला शुरू होने से पहले मुंबई इंडियंस के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा को सम्मानित किया गया। बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी ने रोहित शर्मा को स्मृति चिन्ह दिया।

रोहित के इस सम्मान का वीडियो आईपीएल के एक्स अकाउंट पर शेयर किया गया है। इस वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा गया, मुंबई इंडियंस के रोहित शर्मा को बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी से विशेष स्मृति चिन्ह प्राप्त हुआ। इसके साथ ही रोहित आईपीएल 2025 में सम्मानित होने वाले तीसरे भारतीय प्लेयर बन गए हैं। इससे पहले विराट कोहली और महेंद्र सिंह धोनी को भी सम्मानित किया जा चुका है। रोहित शर्मा आईपीएल के पहले सीजन से लीग का हिस्सा हैं। वह लीग में दूसरे सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले और तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। रोहित शर्मा ने अपने आईपीएल करियर की शुरुआत डेक्कन चार्जर्स से की थी। पहले 3 सीजन पर इस फ्रेंचाइजी का हिस्सा रहे थे। इसके बाद रोहित मुंबई इंडियंस से जुड़ गए थे। 2011 से रोहित लगातार मुंबई के लिए खेल रहे हैं। रोहित शर्मा ने आईपीएल में अब तक 262 मैच खेले हैं। इस दौरान 257 पारियों में उन्होंने 29.31 की औसत और 131.18 की स्ट्राइक रेट से 6684 रन बनाए हैं।

बाबर आजम को टीम से निकाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कराची किंग्स के मालिक सलमान इकबाल ने गुरुवार को पाकिस्तान सुपर लीग 2023 के शुरू होने से पहले बाबर आजम को बाहर करने के कारण का खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि बाबर आजम अपनी बैटिंग पोजिशन को लेकर सहमत नहीं थे, जिसके कारण उन्हें टीम ने रिलीज कर दिया था। कराची किंग्स के मालिक ने कहा कि उन्होंने मिकी आर्थर के साथ बाबर आजम को नंबर तीन पर बल्लेबाजी करने के लिए अनुरोध किया था लेकिन उन्होंने मना कर दिया था। इकबाल ने एआरवाई न्यूज से कहा कि, मिकी आर्थर और मैंने बाबर आजम से कराची किंग्स के लिए नंबर 3 पर बल्लेबाजी करने का अनुरोध किया था। लेकिन वह ऐसा करने में सहज नहीं थे और इसलिए हमें उन्हें रिलीज करना पड़ा। मैनेजमेंट ने पूरे स्क्वॉड को बदलने का निर्णय लिया। इस कारण से हमने बाबर आजम, इमाद वसीम और मोहम्मद आमिर को जाने दिया। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम 2017 से 2022 तक कराची किंग्स की टीम का हिस्सा रहे थे। 90 पीएसएल मैच खेलने के बाद बाबर आजम ने 76 पारियों में पारी की शुरुआत की है। इस दौरान उन्होंने 3103 रन बनाए हैं।

आईपीएल में फ्लॉप हुए ईशान किशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद ईशान किशन लगातार अपनी टीम की फजीहत करवा रहे है। आईपीएल 2025 में ईशान किशन ने पहले मैच में नाबाद 106 रनों की पारी खेली थी, जिससे उम्मीद जगी थी की ईशान किशन बल्ले से धमाका मचा कर रखेंगे। ईशान किशन ने पहली बार हैदराबाद की टीम के लिए खेला है।

ईशान किशन को सनराइजर्स हैदराबाद ने 11.25 करोड़ रुपये में खरीदा था। मगर पहले मैच में धमाका करने के बाद वो लगातार छह मैच में खराब खेल दिखा रहे है। सनराइजर्स हैदराबाद का टॉप ऑर्डर अच्छा प्रदर्शन करने में सफल नहीं रहा है जिसका कारण ईशान किशन भी रहे है।

आईपीएल 2025 में विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन ने पहले मैच में 106 रन बनाए थे। इसके बाद ईशान अगले छह मैचों में 32 रन ही बना सके है। लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ ईशान शून्य रन पर आउट हो गए। दिल्ली कोलताका के बीच खेले गए मैच में वो दो-दो रन बनाकर पवेलियन लौटे। वहीं गुजरात के खिलाफ वो 17 रन ही बना सके। पंजाब किंग्स के खिलाफ उन्हें बल्ले से महज नौ रन निकले थे। मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में वो सिर्फ दो रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इस मैच में ईशान विल जैक्स की गेंद पर चकमा खा गए और आउट हो गए।

ईशान किशन वर्ष 2018 से मुंबई इंडियंस के लिए खेलते थे। मुंबई इंडियंस के लिए ईशान ने 89 मैच खेले है, जिसमें 2325 रन उनके बल्ले से निकले। आईपीएल 2025 के मेगाऑक्शन में सनराइजर्स हैदराबाद ने उन्हें 11.25 करोड़ रुपये में खरीदा था। पहले मैच में शतकीय पारी लगाने के बाद वो लगातार फ्लॉप हो रहे है।

आउट होने के बाद भी नहीं गए पवेलियन, दो कैच के बाद भी मिला मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद बनाम मुंबई इंडियंस मैच के मैच के दौरान एक अजीब घटना भी हुई है। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए इस मैच में ट्रेविस हेड लगातार दो गेंदों पर कैच आउट हुए है। इसके बाद भी वो पवेलियन नहीं लौटे। फील्डर ने ट्रेविस का कैच बिलकुल क्लीन तरीके से पकड़ा था फिर भी वो पवेलियन नहीं लौटे। फील्डर ने ट्रेविस हेड का कैच पकड़ा। इसके बाद भी दो गेंदों पर आउट होने के बाद अंपायर ने ट्रेविस हेड को आउट नहीं किया। इसके पीछे कारण सामने आया है। सनराइजर्स हैदराबाद की पारी में नौवें ओवर में हार्दिक पांड्या गेंदबाजी कर रहे थे। नौवें ओवर की चौथी गेंद पर ट्रेविस हेड स्ट्राइक पर थे। उन्होंने बड़ा शॉट खेलने की कोशिश की और कैच विल जैक्स ने पकड़ा। मुंबई की पूरी टीम ने खुशी मनाई की ट्रेविस का विकेट गया मगर तभी नो बॉल का सायरन बजा। नो बॉल देखकर स्टेडियम में बैठी नीता अंबानी ने भी अपना सिर पकड़ लिया।

नो बॉल के बाद फ्री हिट दी गई। हेड ने इस गेंद पर बड़ा शॉट खेलना चाहा मगर मिचेल सैंटनर ने उनका कैच पकड़ लिया। फ्री हिट पर कैच आउट नहीं हो सकता है, इसलिए ट्रेविस को फिर से लाइफ मिल गई। फ्री हिट में कोई भी बल्लेबाज रन-आउट हो सकता है। इसके अलावा किसी और तरह से आउट नहीं किया जा सकता है। ऐसे में ट्रेविस हेड लगातार दो बार आउट होने के बाद भी वो आउट नहीं हुए।

सनराइजर्स हैदराबाद पॉइंट्स टेबल में अभी नौवें स्थान पर है। ट्रेविस हेड ने अबतक आईपीएल 2025 में सात मैच खेले हैं और उनके बल्ले से 242 रन निकले है। मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेले गए मैच में उन्होंने 28 रन बनाए थे।।

ट्रेविस हेड के नाम दर्ज हुआ शर्मनाक रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई इंडियंस और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच आईपीएल 2025 का 33वां मैच खेला जा रहा है। जहां हार्दिक पंड्या ने टॉस जीतकर पहले हैदराबाद को बल्लेबाजी का न्योता दिया। इस दौरान स्क्रा की ओर से अभिषेक शर्मा और ट्रेविस हेड बल्लेबाजी करने मैदान पर आए। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 59 रनों की पार्टनरशिप भी हुई। हार्दिक पंड्या ने इस पार्टनरशिप को तोड़ा। उन्होंने 8वें ओवर की तीसरी गेंद पर शर्मा को पवेलियन भेज दिया। अभिषेक ने 28 गेंदों पर 40 रन कूट दिए। इसके बाद 10वां ओवर करने आए हार्दिक पंड्या से बड़ी गलती हो गई। ऐसे में ट्रेविस हेड एक गेंद पर 2 बार आउट हुए पर उन्हें पवेलियन नहीं जाना पड़ा। 10वें ओवर की चौथी गेंद पर ट्रेविस हेड का कैच आउट हुए। मुंबई ने इस विकेट का जश्न मनाना भी शुरू कर दिया था, तभी मैदान पर बजे एक सायरन ने सभी को निराश कर दिया। अंपायर ने नो बॉल का इशारा किया। हार्दिक ने अंपायर जयराम मदनगोपाल से जांच की और अपने रन-अप की ओर वापस जाने लगे। हार्दिक ने फिर से ये गेंद फेंकी। इस बार फिर हेड ने हवाई फायर किया और उनका कैच पकड़ा। चूंकि नो बॉल थी ऐसे में हेड एक बार फिर बच गए। हेड को जब जीवनदान मिला तब वह 24 रन बनाकर खेल रहे थे। लेकिन हेड जीवनदान का फायदा नहीं उठा पाए। उन्होंने 3 चौकों की मदद से 29 गेंदों पर 28 रन की पारी खेली। इस धीमी पारी के साथ ही हेड के नाम एक अनचाहा रिकॉर्ड भी बना दिया है। ये आईपीएल इतिहास में ट्रेविस हेड की सबसे धीमी पारी है। इसके अलावा हेड ने एक बेहतरीन रिकॉर्ड भी अपने ना कर लिया है।

आईपीएल 2025 में अचानक बदल गया ये नियम

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में अभी तक 33 मैच हो चुके हैं लेकिन फैंस में अभी भी क्रेज देखा जा रहा है। इस बार आईपीएल के नए सीजन में कई नियम लागू किए गए हैं लेकिन इस बीच सीजन के बीच में ही बीसीसीआई ने अचानक एक नियम में बड़ा बदलाव किया है। ये एक ऐसा बदलाव है, जो बल्लेबाजों के लिए मुसीबत साबित हो सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार बीसीसीआई ने आईपीएल मैच में नजर रख रहे अंपायरों को साफ कर दिया है कि नॉन-स्ट्राइक पर किसी बल्लेबाज को रन आउट किए जाने पर वो फील्डिंग टीम के कप्तान से अपील वापस लेने के बारे में नहीं पूछेंगे। क्रिकबज की एक रिपोर्ट के अनुसार, टूर्नामेंट के बीच में बीसीसीआई ने अंपायरों के साथ एक रिव्यू मीटिंग में कई मद्दों पर चर्चा की। इसमें अभी तक बल्लेबाजों के बैट का साइज चेक करने के नियम में तो बदलाव सुर्खियों में आ चुका है, जो टूर्नामेंट के बीच में ही लागू भी हो चुका है। लेकिन इसके अलावा नॉन-स्ट्राइकर्स एंड पर गेंदबाज की ओर से रन आउट करने के नियम को भी बदलने का फैसला किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि, बीसीसीआई ने अंपायर्स को साफ-साफ कहा है कि अगर किसी भी मैच के दौरान किसी बल्लेबाज को नॉन-स्ट्राइक पर रन आउट किया जाता है, जिसे मांकडिंग कहा जाता है, तो उस पर कप्तान से अपील वापस लेने के बारे में पूछने की जरूरत नहीं है। यानि अंपायर कप्तान से ये नहीं पूछ सकते कि क्या वो रन आउट के अपने फैसले को बदलना चाहते हैं या नहीं। माना जा रहा है कि, इसके पीछे बीसीसीआई की कोशिश मांकडिंग को बाकी विकेट की तरफ ही सामान्य बनाना है। मांकडिंग या नॉन-स्ट्राइक पर रन आउट के मामलों में अक्सर देखा गया है कि जब भी ऐसी घटना होती है तो पूरे क्रिकेट जगत में खेल भावना की बहस छिड़ जाती है। हर बार ऐसा होने पर रन आउट करने वाले गेंदबाज और उस टीम के कप्तान को खूब भला-बुरा कहा जाता है कि उन्होंने खेल भावना का सम्मान नहीं किया। लेकिन पिछले कुछ सालों में इसके पक्ष में भी आवाजें उठी हैं और रनर को इस तरह से आउट किए जाने का खूब समर्थन किया जाता रहा है।

पीएसएल में पहले हेयर ड्रायर के बाद अब खिलाड़ी को मिला ट्रिमर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान सुपर लीग 2025 का सीजन बहुत मजेदार होता जा रहा है। हर दिन हैरान कर देनी वाली घटना सामने आ रही है। पीएसएल में जेम्स विंस को हेयर ड्रायर प्लेयर ऑफ द मैच के खिताब के तौर पर दिए जाने के बाद, 70 सीसी की एक बाइक चर्चा में आई थी। अब एक और नया मामला सामने आया है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा जिसमें खिलाड़ी को ट्रिमर पुरस्कार के तौर पर दिया गया है। दरअसल, पाकिस्तान क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज हसन अली को पीएसएल 2025 में लाहौर कलंदर्स के खिलाफ कराची किंग्स के लिए बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए इनाम के तौर पर ट्रिमर दिया गया। फ्रेंचाइजी ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट किए गए। इस वीडियो में टीम के सहयोगी स्टाफ के एक सदस्य को हसन को पुरस्कार देते हुए देखा गया।

हालांकि, मैच में कराची किंग्स 65 रनों से हार गई, लेकिन हसन ने 4 ओवर में 4/28 के गेंदबाजी आंकड़े से सभी को प्रभावित किया। हसन को प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया और ये इनाम एक बार फिर सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। हसन को इनाम के रूप में ट्रिमर दिया गया।

इससे पहले जेम्स विंस को उनके बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए हेयर ड्रायर दिया गया था। बता दें कि, बीते शनिवार को कराची किंग्स के जेम्स विंस को मुल्तान सुल्तांस के खिलाफ उनकी शानदार मैच जिताऊ पारी के लिए हेयर ड्रायर बतौर इनाम के रूप में दिया था, जिसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हुई। हेयर ड्रायर के बाद 70 सीसी की बाइक चर्चा में आई, जिसे स्टेडियम में देखा गया। इसे लेकर भी सोशल मीडिया यूजर्स ने पाकिस्तान की जमकर खिंचाई की थी।

उप मुख्यमंत्री ने श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय रीवा में टेली मेडिसिन सेवा का किया शुभारंभ

ग्रामीण क्षेत्रों के लिए टेली-मेडिसिन सेवा होगी वरदान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि सरकार प्रदेश के हर क्षेत्र में उन्नत एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के प्रदाय के लिये प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि टेली-मेडिसिन सेवा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ सेवाओं के प्रदाय का सशक्त माध्यम है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय रीवा में टेली-मेडिसिन सेवा का शुभारंभ किया। इस सेवा से रीवा और सीधी जिलों के प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के चिकित्सकों को वरिष्ठ विशेषज्ञों का परामर्श प्राप्त होगा।

इस सेवा के तहत अब संजय गांधी अस्पताल, रीवा के मेडिसिन, शिशु रोग (पेडियाट्रिक्स) तथा स्त्री रोग (गायनी) विभाग के वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सक, दूरस्थ क्षेत्रों में कार्यरत डॉक्टरों को फोन या अन्य संचार माध्यमों से जरूरी परामर्श देंगे। इससे उन मरीजों को तुरंत लाभ मिलेगा जिन्हें विशेषज्ञ सलाह की आवश्यकता होती है। अब ग्रामीण क्षेत्र के नागरिकों को विशेषज्ञ सेवाओं के लिए ज़िला मुख्यालय आने की आवश्यकता विशेष परिस्थितियों में ही पड़ेगी।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि यह सेवा न सिर्फ मरीजों की यात्रा की आवश्यकता को कम करेगी, बल्कि समय, धन और संसाधनों की भी बचत करेगी। साथ ही, इससे प्राथमिक स्तर पर कार्यरत चिकित्सकों को विशेषज्ञों की मदद से त्वरित एवं सटीक निर्णय लेने में सुविधा होगी। इससे मातृ-शिशु स्वास्थ्य, गंभीर बीमारियों की प्रारंभिक पहचान व इलाज की गुणवत्ता में सुधार होगा। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि टेली-मेडीसिन सेवा का प्रभावी उपयोग "सशक्त व स्वस्थ मध्यप्रदेश" के विजन को धरातल पर उतारने में सहयोगी होगा। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने टेली-मेडिसिन कक्ष की व्यस्थाओं का अवलोकन किया एवं विधिवत संचालन के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि वे अगले सप्ताह प्रदान की जा रही सेवाओं की गुणवत्ता की समीक्षा करेंगे। इस दौरान डीन मेडिकल कॉलेज डॉ. सुनील अग्रवाल, अधीक्षक संजय गांधी अस्पताल डॉ. राहुल मिश्रा, डॉ. मनोज इंदुलकर सहित अन्य चिकित्सक उपस्थित रहे।

दूल्हे का शादी से इंकार, दुल्हन ने उठाया आत्मघाती क़दम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शादी की पूरी तैयारी के बाद दूल्हे ने बारात आने से ठीक पहले ही शादी से इंकार कर दिया। दूल्हे के इस फैसले से दुल्हन के घर में जैसे भूचाल आ गया और दुल्हन ने शुक्रवार को आत्मघाती क़दम उठा लिया, जिसे गंभीर हालत में रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिसके बाद मामला पुलिस के पास पहुंच गया और दोनों ही पक्षों ने थाने में अपनी-अपनी बात रखी। एक और दुल्हन के परिजनों का कहना है कि शादी के दिन दूल्हे ने अचानक फैसला बदला और बड़ी बेटी की जगह छोटी बेटी से शादी करने की बात करने लगा, जबकि दो दिन पूर्व तिलक कार्यक्रम संपन्न हुआ है। इधर दूल्हे का आरोप है कि लड़की पहले से शादीशुदा थी जिसका 2022 में तलाक हुआ था, इसकी जानकारी उसे नहीं थी। दूसरी ओर दुल्हन पक्ष का कहना है कि जिस व्यक्ति के द्वारा शादी लगाई गई थी वो दूल्हे का रिश्तेदार है और सारी जानकारी दी गई थी। मनगवां थाना क्षेत्र के रहने वाले दुल्हन के परिजनों ने बताया कि दूल्हा सीधी ज़िले का निवासी है और विवाह तय होने के बाद वो निरंतर संपर्क में रहा है। ये घटना जब पुलिस के पास पहुंची तो मामला बनने की बजाय और बिगड़ता हुआ दिखाई देने लगा। जिससे आहत हो कर दुल्हन ने आत्मघाती क़दम उठा लिया, उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

मऊगंज में बिजली विभाग की लापरवाही से युवक की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज ज़िले के नईगढ़ी थाना क्षेत्र में एक बार फिर बिजली विभाग की बड़ी लापरवाही सामने आई है। [16] यहां बिजली विभाग की लापरवाही के चलते जहां एक भाई मौत हो गई, वहीं दूसरा भाई ज़िंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है। घटना के बाद परिजनों में आक्रोश व्याप्त है। मृतक मोहित पटेल के भाई आशीष पटेल ने बताया कि वो नईगढ़ी थाना क्षेत्र के ग्राम करही के निवासी हैं। उसके भाई रोहित पटेल और मोहित पटेल दोनों सुबह करीब 7 बजे खेत में गेहूं की गहाई कर रहे थे इसी दौरान तार सहित विद्युत पोल दोनों भाइयों के ऊपर गिर गया, जिससे करंट से जलकर मोहित की मौत हो गई जबकि गंभीर रूप से घायल रोहित को उपचार के लिए रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

आशीष ने बताया कि बिजली विभाग द्वारा नया खंभा लगाया गया था। जो बीते दिनों आए आधी तूफान में पूरी तरह से झुक गया था और बिजली विभाग द्वारा बिना किसी जानकारी के निर्माणाधीन खंभों में लगे विद्युत तारों में लाइट चालू कर दी गई। जिसकी जानकारी किसी को नहीं थी, इसी बीच अचानक खंभा दोनों भाइयों के ऊपर गिर गया। पीड़ित परिवार ने ज़िम्मेदार अधिकारी और कर्मचारियों पर मामला दर्ज कर कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

आई टीआई रीवा में रोज़गार मेला 21 अप्रैल को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय आई टीआई रीवा में 21 अप्रैल को सुबह 11 से दोपहर 2 बजे तक [ड्डस्नस्न] युवा संगम कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। जिसके तहत आयोजित रोज़गार मेले में ज़िले के बेरोज़गार युवक-युवतियों को विभिन्न कंपनियों में रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोज़गार गार अनिल दुबे ने बताया कि रोज़गार मेले में 10 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों में युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 50 वर्ष के बीच होनी चाहिए। वेतन एवं भत्त 8500 रुपए से 25 हज़ार रुपए तक निर्धारित किया गया है। हालांकि वेतन एवं भत्ता विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग देय होगा। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोज़गार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज़ के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल से आचार्य बालकृष्ण ने की सौजन्य भेंट

पतंजलि संस्थान द्वारा विंध्य क्षेत्र में किए जा रहे निवेश एवं औद्योगिक परियोजनाओं पर हुई विस्तृत चर्चा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हाल ही में रीवा में आयोजित रीजनल इंडस्ट्री के माध्यम से विंध्य क्षेत्र में निवेश के नए और अपार अवसर खुले हैं। जो विंध्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे। पतंजलि समूह जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों की भागीदारी से इस क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति की मजबूत आधारशिला रखी जा सकती है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल से अमहिया, रीवा स्थित निज निवास पर पतंजलि योगपीठ के संस्थापक सचिव आचार्य बालकृष्ण ने सौजन्य भेंट की।

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि जैसे हम हरित क्रांति ला रहे हैं, अब विंध्य क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि रीवा क्षेत्र में नेचुरल रिसोर्स के आधार पर सीमेंट प्लांट तो आ ही रहे हैं, लेकिन अगर पतंजलि ग्रुप का फूड प्लांट यहां आ जाता है तो यह 1000 करोड़ रुपये के निवेश का मार्ग खोलेगा, जिससे किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि जब फूड प्लांट लगते हैं तो किसानों की समृद्धि बढ़ती है, क्योंकि उन्हें पता चलता है कि कौन सी फसल उगाई जाए जिससे उन्हें सीधा आर्थिक लाभ हो। पतंजलि देश में फूड क्रांति के क्षेत्र में सबसे बड़ा समूह है। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण से उनकी चर्चा 2011-12 में ही हुई थी। तब बाबा रामदेव ने कहा था कि पहले वे नागपुर और इंदौर में प्लांट लगाएंगे, फिर अन्य जगहों पर विचार करेंगे। शुक्ल ने कहा कि इसके बाद मैं लगातार इंतजार करता रहा। रीवा में जब रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव हुआ, उससे पहले मैं हरिद्वार जाकर बाबा रामदेव से मिला। मैंने पूछा कि नागपुर का क्या हुआ, उन्होंने कहा - हो गया। फिर मैंने पूछा इंदौर का क्या हुआ, उन्होंने कहा - हो गया। तब मैंने आग्रह किया - अब रीवा चलिए। हमने कहा कि 400 एकड़ जमीन मऊगंज के पास पतंजलि के लिए रिजर्व कर रखी है। यह जमीन पिछले 15 सालों से किसी को नहीं दी गई थी, हम सिर्फ पतंजलि का इंतजार कर रहे थे। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि 2007 में बाबा रामदेव पहली बार रीवा आए थे, और तभी से उनका रीवा से विशेष स्नेह जुड़ा है। बाबा रामदेव ने बालकृष्ण जी को बुलाया और कहा कि अब हमें रीवा में फूड प्लांट लगाना चाहिए। पतंजलि ने अब 25 करोड़ रुपये जमा कर जमीन की रजिस्ट्री भी करवा ली है, जिससे स्पष्ट है कि अब उनकी रूचि रीवा में है। बालकृष्ण जी स्वतः साइट देखने भी गए। उप मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि इस फूड प्लांट से धरती से दौलत पैदा होगी। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कथन को दोहराते हुए कहा कि देश को समृद्धशाली बनाना है तो धरती से दौलत पैदा करनी होगी।उपमुख्यमंत्री ने कहा, पतंजलि ग्रुप का रीवा में निवेश आना एक सुखद संकेत है।

इस अवसर पर पतंजलि संस्थान के संस्थापक, सचिव, आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि रीवा में संभावनाएं भी हैं और भावनाएं भी। उपमुख्यमंत्री जी इस क्षेत्र के विकास और रोजगार के लिए प्रतिबद्ध हैं, और पतंजलि इस दिशा में एक नई योजना बनाएगा। पहला चरण पूरा हो चुका है, रजिस्ट्री का कार्य हो गया है। हमने दुनिया के लिए एक व्यापक और वृहद रूपरेखा तैयार की है। हमें विश्वास है कि विकास की गंगा के साथ-साथ किसानों के जीवन में भी समृद्धि आएगी।हम यहां एक 'रो आधारित प्रोडक्ट' बनाएंगे, कल्टीवेशन वगैरह भी करेंगे। जो उत्पाद हम बनाएंगे, उनका कच्चा माल किसान उगाएंगे और हम उनसे ही खरीदेंगे। इसे हम इंडस्ट्रियल फूड पार्क के रूप में विकसित करेंगे। हम प्रयास करेंगे कि और भी उद्योग जगत के लोग और संस्थाएं यहां आएं और निवेश करें। एग्रीकल्चर फील्ड में ज्यादा रोजगार मिलता है, सिर्फ फैक्ट्री में काम करने से रोजगार नहीं बढ़ता। इस पहल से हजारों लोगों को रोजगार मिलेगा। हमने घोषणा की थी कि शुरुआत 500 करोड़ से करेंगे, लेकिन यह निवेश 1000 करोड़ तक जाएगा। यहां स्किल डेवलपमेंट और एजुकेशन के क्षेत्र में भी काम करेंगे।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष अक्टूबर माह में रीवा में आयोजित हुये इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव में पतंजलि समूह द्वारा उद्यम इकाई स्थापित करने की सहमति दी गयी थी तदनुक्रम में पतंजलि योग पीठ के संस्थापक सचिव आचार्य बालकृष्ण पंजीकृत एग्रीमेंट के दस्तावेज प्रस्तुत करने रीवा आये थे।

तेज़ रफ्तार कार की चपेट में आया बाइक सवार परिवार, एक की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा ज़िले के सगरा थाना क्षेत्र के समीप एक तेज़ रफ़्तार कार ने बाइक सवार परिवार को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में पिता-पत्नी सहित दो मासूम बच्चे घायल हो गए। जिन्हे उपचार के लिए रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान एक व्यक्ति की मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि इटौरा निवासी महेंद्र साकेत अपनी पत्नी सुनीता साकेत, बच्ची सोना साकेत सहित दो माह के बच्चे को लेकर सदहना ,कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे। तभी सुबह करीब साढ़े 11 बजे सिंदुरा मोड़ के समीप कार ने बाइक सवार को अपनी चपेट में ले लिया। घटना के बाद सभी घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान महेंद्र साकेत की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि घटना में उसकी पत्नी सुनीता साकेत और सोना साकेत को गंभीर चोट आई है जिनका उपचार संजय गांधी अस्पताल में चल रहा है।

छायाचित्र प्रदर्शनी का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय के तत्वाधान में जिला पुरातत्व संग्रहालय व्यंकट भवन रीवा में विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर विश्व पटल पर राम छायाचित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ कर्नल अविनाश रावल प्राचार्य सैनिक स्कूल रीवा द्वारा किया गया। इस दौरान अभिषेक शर्मा, डॉ. मुकेश येंगल, कुलदीप सिंह, शिव भरत वास्तव, तेज बहादुर सिंह, जयराम पाण्डेय उपस्थित रहे। प्रदर्शनी का बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं एवं स्थानीय जनों द्वारा अवलोकन किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रदर्शनी 18 अप्रैल से 24 अप्रैल तक प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक आम नागरिकों के लिये निःशुल्क खुली रहेगी।

घर से भटककर आई वृद्ध महिला को उसके पुत्र से मिलाया गया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बैकुंठपुर थाने के स्टाफ द्वारा गत दिनों एक अज्ञात महिला को महिला बाल विकास द्वारा संचालित वन स्टॉप सेंटर मे लाया गया था। महिला की असहजता को दूर करते हुए वन स्टॉप सेंटर की केस वर्कर रेखा चतुर्वेदी ने काउंसलिंग की और उसके विषय में जानकारी एकत्र करते हुए प्रशासक सुमन नामदेव को संपूर्ण जानकारी दी। नामदेव के मार्गदर्शन पर क्षितिज तिवारी द्वारा परिवारजनो की खोजबीन की गई। सतना जिले के ग्राम कोटर की रहने वाली 53 वर्षीय महिला के पुत्र को रीवा बुला कर उसकी माँ से मिलाया गया। उल्लेखनीय है कि महिला तकरीबन 4-5दिन से अपने घर से भटक कर रीवा आ गई थी अब उसे उसका बेटा अपने घर ले गया।

हिनौती गौधाम में सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करायें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हिनौती गौधाम में गौवंशों के लिए शेड की व्यवस्था सहित चारा व पानी सुविधा सुनिश्चित करायें। गौधाम में पानी की कमी न होने पाये इस पर विशेष ध्यान दें। सर्किट हाउस राजनिवास में हिनौती गौधाम के संबंध में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री ने अधोसंरचना विकास के कार्यों सहित अन्य निर्माणाधीन कार्यों की विस्तार से जानकारी ली।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हिनौती गौधाम में टैंकर के माध्यम से पानी पहुंचाने की व्यवस्था करायें भविष्य में पानी की उपलब्धता की भी कार्ययोजना अनुसार कार्य करें तथा गौवंश के लिए पशु आहार की भी उपलब्धता सुनिश्चित करायें। उन्होंने कहा कि गौधाम में व्यवस्था के अनुरूप ही गौवंश संरक्षित रखे जाय। उन्होंने निर्माणाधीन कार्यों की धीमी प्रगति व व्यवस्थाओं में कमी होने पर नाराजगी व्यक्त की तथा एसडीएम को निर्देश दिये कि प्रतिदिवस हिनौती गौधाम जाकर व्यवस्थाओं की मानीटरिंग करें। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल, अध्यक्ष गंगेव जनपद विकास तिवारी, एसडीएम राजेश सिन्हा, समाजसेवी राजेश पाण्डेय, उप संचालक पशुपालन विभाग डॉ. राजेश मिश्रा सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में खिलाड़ियों को मिलेगा प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। म.प्र. शासन खेल और युवा कल्याण विभाग के तत्वाधान में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन एक मई से 31 मई तक शहरी क्षेत्रों के विभिन्न खेल मैदान पर 15 खेलों में 50 प्रशिक्षक एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विकासखण्ड स्तर पर 02 खेलों में प्रशिक्षण दिया जायेगा। पुलिस कंट्रोल रूम के सभागार में पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के निर्देशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरती सिंह की उपस्थिति में बैठक आयोजित की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरती सिंह ने कहा कि बारीकियों के साथ-साथ नशे के दुष्परिणामों से भी युवाओं को अवगत कराये, तथा अधिक से अधिक युवाओं को खेलों से जोड़े। संभागीय खेल और युवा कल्याण अधिकारी एम.के. धौलपुरी ने बताया कि सभी खिलाड़ी (बालक/बालिका) जिनकी आयु 8 वर्ष से 18 वर्ष के मध्य है भाग ले सकते हैं। सभी खिलाड़ियों से आग्रह है कि निर्धारित समय व स्थान पर पहुंचकर निःशुल्क पंजीयन करा कर भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये शहरी क्षेत्र हेतु सु राखी सिंह, 8269482556 अमर सिंह जाटव, 9753622200 रीतिका शर्मा, 8878093678 तोषराम कनोजे 9977975947 एवं ग्रामीण क्षेत्र में प्रत्येक ब्लाक के समन्वयक से संपर्क कर सकते है जिनके मोबाईल नं. -ब्लॉक रायपुर कर्चुलियान - ज्योति सिंह, 9713583388, ब्लॉक सिरमौर वंदना सिंह 9644773929, ब्लॉक गंगेव विकास कुमार सोनी 9200683980, ब्लॉक जवा नीरज कुमार द्विवेदी 6262252379, ब्लॉक हनुमना पुष्पादेवी पटेल 9691047124, ब्लॉक रीवा, दिलीप सिंह 826535523, ब्लॉक त्योथर . प्रतिभा खरे 9981389629. ब्लॉक मऊगंज' अमर पासी 9685074255, ब्लॉक नईगढी रामनरेश कोल 7224869526 से संपर्क कर ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित होने हेतु संम्पर्क किया जा सकता है।

कार सहित नशीली कफ सिरप की बड़ी खेप के साथ तस्कर पकड़ाए

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मेडिकल नशे का गढ़ बनते जा रहे रीवा ज़िले में फिर नशीली सिरप की एक बड़ी खेप पकड़ी गई है। पुलिस ने रायपुर कर्चुलियान के जोगिनहाई टोल प्लाज़ा के पास कार से 11 सौ 62 शीशी नशीली सिरप के साथ तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक कार में नशीली सिरप की बड़ी खेप लाई जा रही है। जिसके बाद पुलिस अधिकारियों ने चार अलग-अलग टीम गठित की। जिसके बाद जोगिनहाई टोल प्लाज़ा के पास घेराबंदी कर वाहन को रोका गया। तलाशी के दौरान कार से पांच प्लास्टिक की बोरियों में भारी मात्रा में नशीली कफ सिरप बरामद की गई। पुलिस की पूछताछ में कार सवार, कोई वैध दस्तावेज़ नहीं दिखा सके जिसके बाद तीनों को गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध एनडी पीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। बताया गया है कि आरोपी नशीली सिरप बनारस से रीवा ला रहे थे। पकड़े गए आरोपियों में वीरेंद्र कुमार नामदेव, रवि साकेत और अनिल साकेत शामिल हैं। आरोपियों ने पूछताछ में कई अन्य तस्करों के नाम भी बताए हैं।

स्कूटी छोड़कर मौके से भाग निकले

वहीं एक अन्य कार्रवाई में शुक्रवार की तड़के करीब 4 बजे सिटी कोतवाली पुलिस ने घेराबंदी कर पांच पेटियों में नशीली कफ सिरप की खेप को पकड़ा है। जिसमें आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गए। जिनकी पुलिस तलाश कर रही है। बताया गया है कि रात्रि गश्त के दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दो युवक स्कूटी में सवार होकर नशीली कफ सिरप की खेप लेकर आ रहे हैं। जिसके बाद पुलिस टीम घेराबंदी की, लेकिन आरोपी पुलिस को देखते ही स्कूटी छोड़कर मौके से भाग निकले। स्कूटी के आधार पर आरोपियों की पहचान कर उनकी तलाश की जा रही है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।